(जाके) अर्ध रूप पै सकल पसारा ।
ऐसा पूरन ब्रह्म हमारा ॥ ९ ॥
दास गरीब कहै नर लोई ।
यह पद चीन्है बिरला कोई ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

सतबादी सब संत हैं, आप आपने धाम ।
आजिज* की अरदास† है, सकल संत परनाम ॥

राग कल्यान

सेस सहस मुख गावै, साधो सेस सहस मुख गावै॥टेक॥
ब्रह्मा बिस्नु महेसर थाके, नारद नाद बजावै ।
सनक सनंदन ध्यान धरत हैं, दृष्ट मुष्ट नहिं आवै १
लघु दीरघ कछु कहा न जाई, जो पावै सो पावै ।
जीव‡ जूनी कूँ कैसे दरसै, गोरज सीस चढ़ावै ॥ २ ॥
ब्रह्म-रंध्र का घाट जहाँ है, उलट खेचरी§ लावै ।
सहस कमल दल झिलमिल रंगा, चोखा फूल चुवावै॥३
गंगा जमना मद्ध सरसुती, चरन कमल से आवै ।
परबी कोटि परम पद माहीं, सुख के सागर न्हावै॥४
सुरत निरत मन पौन पदारथ, चारो तत्त मिलावै ।
आकासे उड़ चले बिहंगम, गगन मँडल कूँ धावै ॥५॥
मोर मुकुट पीताँबर राजे, कोटि-कला छबि छावै ।
अबरन बरन तासु के नाहीं, बिचरत हैं निरदावै ६॥

---

* आधीन । †अर्ज़दाश्त, प्रार्थना । ‡जीव । §नाम एक मुद्रा का ।

बिनही चरनौं चलै चिदानंद, बिन मुख बैन सुनावे।
गरीबदास यह अकथ कहानी, ज्यूँ गूँगा गुड़ खावै॥७॥

(२)

कबहुँ न होवे मैला नाम धन, कबहुँ न होवे मैला।
चेतन होकर जड़ कूँ पूजै, मूरख मूढ़र बैला॥१॥
जिस दगड़े पंडित उठ चालै, पीछे पड़ गया गैला*।
औघट घाटी पंथ बिकट है, जहाँ हमारी सैला॥२॥
बिनय बंदगी म्हेसा† कीजै, बोक‡ बनै के खेला§।
कूकर सूकर खर कीजैगा, छाँड़ सकल बद|| फैला॥३॥
घरही कोस पचास परत हैं, ज्यूँ तेली के बैला।
पोसत भाँग तमाखू पीवै, मूरख मुख सूँ मैला॥४॥
सहस इकीसौ छः सै दम है, निस बासर तूं लैला¶।
गरीब दास सुन पार उतर गये अनहद नाद घुरेला**॥५॥

(३)

घट ही में चंद चकोरा, साधो घट ही चंद चकोरा॥टेक॥
दामिन दमकै घनहर†† गरजै, बोलै दादुर मोरा।
सतगुरु गस्ती गस्त फिरावै, फिरता ज्ञान ढँढोरा॥१॥
अदली राज अदल बादसाही, पाँच पचीसो चोरा।
चीन्हो सब्द सिंध घर कीजै, होना गारतगोरा॥२॥
त्रिकुटी महल मैं आसन मारो, जहँ न चलै जम जोरा।
दास गरीब भक्ति को कीजो, हुआ जात है भोरा‡‡॥३॥

*जिस रास्ते पर पंडित चलते हैं उसी पर सब चलने लगते हैं। †हमेशा। भारी बकरा। §छाँड़। ||कुकर्म्म। ¶लेता है। **जिसकी अंतर में धुन हो रही है। ††बादल। ‡‡सबेरा।

(४)

घट से दरस जहूरा, साधो घट से दरस जहूरा॥टेक॥
कायर कीर उलट कर भागे, पहुंचैगा कोइ सूरा।
गगन मँडल में अनहद बाजे, झनकैं झीने तूरा* ॥१॥
त्रिकुटी महल में ध्यान समोवो, झिलमिल झिल-
मिल नूरा।
अगर दीप में आसन मारो, मिट गई जम की घूरा† २
संख पदम जहँ परघट देखे, मुरसिद मिलिया पूरा।
दास गरीब अटल जागीरा, काढ़ै कौन कसूरा॥ ३ ॥

(५)

जो सूते सो जना बिगूते, जागे सोई जगे हैं॥टेक॥
सूरे तेई नगर पहूंचे, कायर उलट भगे हैं।
नौवैं द्वारे दरस दरीबा§, दसमें ध्यान लगे हैं॥ १ ॥
सुन्न सहर में हुई सगाई, हमरे हंस मँगे हैं।
निरगुन नाम निरालंब चीन्हो, हमरे साध सगे हैं॥२॥
बिन मुख बानी सतगुरु गावै, नाहीं दस्त| पगे* हैं।
दास गरीब अमर पुर डेरे, सत्त के दाग दगे हैं॥ ३ ॥

(६)

नाम निरंजन नीका, साधो नाम निरंजन नीका॥टेक॥
तीरथ बरत थोथरे** लागैं, जप तप संजम फीका॥१॥
भजन बंदगी पार उतारै, समरथ जीवन जी का॥२॥
करम कांड ब्योहार करत है, नाम अभय पद टीका ३

*तुरही। †टेढ़ी निगाह। ‡बिगड़े। §हाट। |हाथ। *पाँव। **थोथे।

कहा भयो छत्र की छाँह चलैया, राज पाट दिहली का ४
नाम सहित बेवतन भला है, दर दर माँगे भीखा ५
आदि अनादि भक्ति है नौधा*, सुनो हमारी सीखा ६
गरीबदास सतगुरु की सरने, गगन मँडल मेँ दीखा ॥७

राग बिजोग

सुनियो संत सुजान, दिया मैँ हेला रे ॥ टेक ॥
और जनम बहुतेरे होंगे, मानुष जनम दुहेला† रे॥१॥
तू जकिहै‡ मैँ लसकर जोरौं, चलना तुझे अकेला रे २
अरब खरब लग माया जोरी, संग न चलसी धेला रे ।
या तो मेरी सत की निबरिया, सतगुरु पार पहेला रे ४
दास गरीब कहै रे संतो, सब्द गुरू चित चेला रे ॥५

(२)

सुनिये संत सुजान, गरब नहिं करना रे ॥ टेक ।
चार दिनाँ की चिहर§ बनी है, आखिर तोकूँ मरना रे १
तूँ जाने मेरि ऐसी निभेगी, हर दम लेखा भरना रे २
खाय ले पी ले खिलस ले हंसा, जोड़ जोड़ नहिं धरना रे ३
दास गरीब सकल में साहब, नहीं किसी सूँ अड़ना रे ४

राग परज

राम न जाना रे, मूढ़ नर राम न जाना रे ॥ टेक ॥
जल की बुंद महल रचा, यह सकल जहाना रे ।
जठर अगिन सूँ राखिया, तेरा पिंड अरु प्राना रे॥१

*नौ प्रकार की । †कठिन । ‡बिचारता है । §ज़िन्दगी ।

जहँ तो कूँ भोजन दिया, अमृत रस खाना रे ।
गरभ बास तेँ काढ़ि कै, नर बाहर आना रे ॥ २॥
लीला अगम अगाध है, सूरत बिध नाना रे ।
मात पिता सुत बंधवा, क्या देख भुलाना रे ॥३॥
इनमेँ तेरा को नहीँ, क्योँ भया दिवाना रे ।
जा तन चंदन लेपते, ले धरे मसाना रे ॥४॥
सूवे सँभल सेइया, तर देख लुभाना रे ।
चंच* मार व्याकुल भया, बहुतै पछताना रे ॥ ५ ॥
मानसरोवर कमल दल, घर दूर पयाना रे ।
गये रसातल राह को, पढ़ पोथी पाना† रे ॥६॥
सतगुरु संत सेये नहीँ, पूजे पाषाना रे ।
मरकब भये कुम्हार के‡, फिर सूकर स्वाना रे ॥७॥
पंथ पुरातन§ बूझि है, कोई संत सुजाना रे ।
स्वासा पारस नाम है, नाभी अस्थाना रे ॥८॥
हिरदय मेँ हरि पाइये, त्रिकुटी परवाना रे ।
गगन मँडल में गुमठ‖ है, जहँ धजा निसाना रे ॥९॥
हाजिर नाजिर है धनी, साहब दिल दाना रे ।
पलकोँ चौँरा¶ कीजिये, तापर कुरबाना रे ॥१०॥
मन पवन सुरत से अगम है, कह निरत बयाना रे ।
जैसे उलट अकास कूँ धरिहै धुन ध्याना रे ॥११॥
आसन बंध अडोल मन, जो पदहि समाना रे ।
गरीबदास यूँ पाइये, पिव पुरुष पुराना रे ॥१२॥

*चोंच । †पन्ना । ‡कुम्हार के चढ़ने का जानवर यानी गधा ।
§प्राचीन । ‖गुंबज । ¶चँवर ।

(२)

लेखा लीजे रे, धनी के लेखा लीजे* रे ॥टेक॥
हाट पटन सब लुट गये, कहु अब क्या कीजे रे।
पूँजी माल गँवाइया, फिर कौन पतीजे रे ॥१॥
मैं गाफिल भूला फिरूँ, गढ़ हंस चढ़ीजे रे।
चाकर चोर अनादि का, सिर बोझा दीजे रे॥ २॥
सीस काट हाजिर करै, जब सतगुरु रीझै रे।
अमी महारस नाम है, अमृत पय पीजै रे ॥३॥
गगन मँडल भाठी झरै, कमला दल भींजै रे।
सब्द अनाहद घोर है, चल हंस सुनीजे रे ॥४॥
पूँजी साहूकार की, यह हर दम छीजै रे।
गरीबदास दूने करै, सो साह कहीजे रे ॥५॥

(३)

लेखा देना रे, धनी का लेखा देना रे ॥टेक॥
रागी राग उचारहीं, गावत मुख बैना रे।
हस्ती घोड़े पालकी, छाँड़ी सब सैना रे ॥१॥
रोकड़ धरी ढकी रही, सब जेवर गहना रे।
फूँक दिया मैदान में, कुछ लेन न देना रे ॥२॥
मुगदर मारै सीस मैं जम किंकर दहना रे।
उतर चला तागीर† हो, ज्यूँ मरदक सहना‡ रे ॥३॥
फूला सो कुम्हलात है, चुनिया सो ढहना§ रे।
चित्रगुप्त लेखा लिया, जब कागद पहना‖ रे ॥४॥

*ईस्वर के यहाँ हिसाब लिया जायगा। †तंग। ‡मसल मशहूर है "उतरा सहना मर्दक नाम"। §जो घर चुना या बनाया जाता है वह कोई दिन गिर जायगा। ‖लंबा चौड़ा।

चलिये अब दीवान मैं, सतगुरु से कहना रे ।
मुसकिल से आसान हो, ज्यूँ बहुर मरै ना रे ॥५॥
बोया अपना सब लुनै*, पकरैं हम अहना† रे ।
चरन कमल के ध्यान से, छूटै सब फैना‡ रे ॥६॥
परानन्दनी§ संग है, जाके कमधैना|| रे ।
गरीबदास फिर आवही, जो अजर जरै ना रे ॥७॥

(४)

भजन कर राम दुहाई रे ॥ टेक ॥
जनम अमोला तुझ दिया, नर देही पाई रे ।
देही कूँ या ललचहीं, सुर नर मुनि भाई रे ॥ १ ॥
सनकादिक नारद रटैं, चहुं बेदा गाई रे ।
भक्ति करै भवजल तरै, सतगुरु सरनाई रे ॥ २ ॥
मिरगा¶ कठिन कठोर है, कहो कहाँ डहकाई** रे ।
कस्तूरी है नाभ मैं, बाहर भरमाई रे ॥ ३ ॥
राजा बूड़े मान मैं, पंडित चतुराई रे ।
ज्ञान गली मैं बंक†† है, तन धूर मिलाई रे ॥ ४ ॥
उस साहब कूँ याद कर, जिन सौंज‡‡ बनाई रे ।
देखत ही हो जात है, परबत से राई रे ॥ ५ ॥
कंचन काया छार§§ होय, तन ठौंक जराई रे ।
मूरख भौंदू बावरे, क्या मुकत कराई रे ॥ ६ ॥

---

* काटे । † लोहा । ‡ फन्दा । § परम आनंद या रस की खान । || कामधेनु । मन । ** धोखा खाया । †† टेढ़ाई, पेच । ‡‡ साज । §§ राख ।

चमरा* जुलहा† तर गये, और छीपा‡ नाई§ रे ।
गनिका चढ़ी विमान मैं¶, सुर्गापुर जाई रे ॥ ७ ॥
स्योरी भिलनी तर गई, और सदन कसाई रे ।
नीच तरे तो सूँ कहूं, नर मूढ़ अन्याई रे ॥ ८ ॥
सब्द हमारा साँच है, और ऊँट की बाई रे¶ ।
धूँएँ के से धौलहर, तिहुं** लोक चलाई रे ॥ ९ ॥
कलबिष कसमल सब कटै, तन कंचन काई रे ।
गरीबदास निज नाम है, नित परची न्हाई रे ॥ १० ॥

राग मंगल

लगन लगी सतलोक, अमरपुर चालिये ।
सुन्न मँडल सतलोक, दीप घर बालिये ॥टेक॥
जोगिया नाद बजाय, रहा है ओलने†† ।
सत्तलोक के अंक, लिखे हैं चोलने ॥ १ ॥
हम बिभिचारन, चोरि जारि बहुते किये।
मेहरबान महबूब, तुम्हीं अनगिन दिये‡‡ ॥२॥
होते कीट पतंग, संग किस बिध लिये ।
कंपै जोरा काल, सही जुग जुग जिये ॥ ३ ॥
अकल उदासी राग, अमर§§ मैं बोलता ।
सुरत निरत भइ नेस॥, पवन नाहिं डोलता ॥४॥

*रैदास जी । †कबीर साहब । ‡नामदेव । §सैना भक्त । नोट पृष्ठ २४ देखो । ¶सब्द के सिवाय सब पसारा ऊँट की बाव अर्थात मिथ्या है । **तीनों । ††परदे मैं । ‡‡तुम्हारी अपार छिमा और दया हुई । §§सत्तलोक । ॥नेष्ठा ।

मन राते सतलोक, सिंध मैं गैब है ।
उलट मिले अनुराग, तहाँ नहिं ग्रैब है ॥ ५ ॥
निरगुन भाड़* का भेद, भँवर कोइ जानसी ।
दास गरीब समाध, अमरपुर ठानसी ॥ ६ ॥

(२)

दीन के दयाल, भक्ति बिर्द† दीजिये ।
खानाजाद गुलाम, अपन कर लीजिये ॥ टेक ॥
खानाजाद गुलाम, तुम्हारा है सही ।
मेहरबान महबूब, जुगन जुग पत रही ॥ १ ॥
बाँदी का जाम‡ गुलाम, गुलाम गुलाम है ।
खड़ा रहै दरबार, सु आठो जाम है ॥ २ ॥
सेवक तलबदार, दर तुम्हरे कूकहीं ।
औगुन अनंत अपार, परी मोहिं चूक हीं ॥ ३ ॥
मैं घर का बन्दाजादा, अरज मेरि मानिये ।
कहता दास गरीब, अपन कर जानिये ॥ ४ ॥

(३)

धन सतगुरु बरियाम§, अटल बर हम बरी ।
दुलहिन के बड़ भाग, सुहागिन धन घरी ॥ टेक ॥
चलो सखी सतलोक, सेहरा गाइये ।
मोतियन थाल भराय, सु चौक पुराइये ॥ १ ॥
हलदवान‖ हित कीन, बीन जहँ बाजहीं ।
धन सतगुरु उपदेस, दिहाड़ा¶ आजहीं ॥२॥

*झाड़, फुलवारी । †साख । ‡ जन्मा हुआ । § वरीयान-श्रेष्ठ ।
‖हल्दीहाथ की रसम । ¶दिन ।

दुलहिन धोये देह, सु मंगल गावहीं ।
सत्त पुरुष के धाम, सु चौंर ढुरावहीं ॥ ३ ॥
ढुरै सुहंगम चौंर, सु चौरी* गाइये ।
ब्रह्मा कथते बेद, लाड़ी परनाइये† ॥ ४ ॥
संकर साहा सोध‡, समागम कीजिये ।
बिसुन बिसंभर रोप, अटल बर दीजिये ॥ ५ ॥
नारद पूरै नाद, सकल सुर आवहीं ।
सुन्न मँडल सतलोक अगम घर छावहीं ॥ ६ ॥
जहँ सेत धजा फहराहिं, अरस§ तंबू तना ।
अनहद नाद अगाध, लाये नूरी बना‖ ॥ ७ ॥
नाद तूर डफ झाँझ, संख मुरली बजै ।
मिरदंग झालर भेरि, अजब तुरही सजै ॥ ८ ॥
रंग महल में रास, बिलास अपार है ।
चलो सखी उस धाम, सु कंत हमार है ॥ ९ ॥
दस परकार अपार, अजब धुन ध्यान है ।
दूलह बर बरियाम, पिया निःकाम है ॥ १० ॥
बिषम दुहेली¶ बाट, पंथ नहिं पाइये ।
सुन्न मँडल सतलोक कौन बिध जाइये ॥ ११ ॥
सुन्न मँडल सतलोक, दुलहिनी दूर है ।
सब्द अतीत** पिछान, नूर भरपूर है ॥ १२ ॥

---

*मंडप की गीत । †दुलहिन को ब्याहिये । ‡लगन सोधना ।
§अर्श=सहसदल कमल । ‖दुलहा । ¶कठिन । **निर्मोया ।

नूर रहा भरपूर, दिवाना देस है ।
दुलहिन दास गरीब, तखत जिस पेस है ॥ १३ ॥

(४)

अवगत अपरंपार, पार नहिं पावै हो ।
नाद बिंद का जीव, भरम डहकावै हो ॥ टेक ॥
मन मनसा नहिं ठौर, ध्यान कहा धरिये हो ।
का सूँ करूँ फरियाद, कहो क्या करिये हो ॥ १ ॥
तज दुरमत का संग, रंग नहिं लागै हो ।
कोट जनम का स्वान*, हाड़ नहिं छाँड़ै हो ॥२॥
बिषै हलाहल खाय, जगत सब धूना† हो ।
ज्यूं हिरना के संग, सिकारी कूता‡ हो ॥ ३ ॥
कौवा तजै न बीट§, हंस कस होई हो ।
अंध गुरू का चेल, खेल सब खोई हो ॥ ४ ॥
बैठा मंझ मंजार||, मूसटे¶ खाई हो ।
बाहर किसा** अचार††, बूड़ी पंडिताई हो ॥ ५ ॥
बक मीनी‡‡ का ध्यान, नहीं नर धरिये हो ।
भौसागर में आन, बहुर क्यूं परिये हो ॥ ६ ॥
पारस पद कूँ परस, सुरत ठहरावो हो ।
निरत निरंतर लाय, अगमपुर जावो हो ॥ ७ ॥
जहं झिलमिल झिलमिल होय, अजब खिलखाना§§ हो।
कहता दास गरीब, सुदेस दिवाना हो ॥ ८ ॥

*कुत्ता। †धूर्त्त, कपटी। ‡कुत्ता। §बिष्टा। ||बिल्ली। ¶चूहे। **कैसा। ††आचार, नेम धरम। ‡‡बकुला और मछली। §§ खिलवत ख़ाना=एकान्त में मिलने का स्थान।

(५)

रतनागर[*] सुख सागर, हंसा चाल रे ।
जहँ पारस पदम अनंत, अमीते[†] माल रे ॥ १ ॥
रतन सिंध बैराग रे, मुक्ते[†] माल हैं ।
हीरे मोती मुकते, लालों पाल[†] हैं ॥ २ ॥
कामधेनु कलवृच्छ[‡], चिंतामनि चीन्ह रे ।
लोचन खुलहिं अनंत, अरस दुरबीन रे ॥ ३ ॥
खुलिहैं अंध कपाट, लगै जो चाचरी[§] ।
सिम्भुद्वार[‖] दुरबीन, तहाँ पद बाँच री ॥ ४ ॥
बंका हीरा देखि, सुरत हैरान है ।
सेत धजा फहराहिं, अमरपुर थान है ॥ ५ ॥
मान सरोवर परवी, हर दम लीजिये ।
झिरै गऊमुख गंग, तहाँ सिर दीजिये ॥ ६ ॥
पलकों चौंर दुराहिं, नयन पट बीच है ।
गरीबदास गुलजारा, परमल[¶] सींच है ॥ ७ ॥

॥ राग बँगला ॥

बँगला खूब बना है जोर, जामें सूरज चंद कड़ोर ॥ टेक ॥
या बँगले के द्वादस दर हैं, मध्य पवन परवाना ।
नाम भजे तो जुग जुग तेरा, नातर होत बिराना ॥ १
पाँच तत्त औ तीन गुनन का, बँगला अधिक बनाया॥
या बँगले में साहब बैठा, सतगुरु भेद लखाया ॥२।

[*]सुन्न सरोवर । [†]बहुत । [‡]कल्प वृक्ष । [§]नाम एक मुद्रा का । [‖]शिव-नेत्र या तीसरा तिल । [¶]निर्मल, सुगंधित ।

रोम रोम तारागन दमकै, कली कली दर चंदा ।
सूरज मुखी सबत्तर* साजे, बाँधा परमानन्दा ॥३
बँगले में बैकुंठ बनाया, सप्त पुरी सैलाना ।
भुवन चतुरदस लोक बिराजैं, कारीगर कुरबाना ४
या बँगले में जाप होत है, ररंकार धुन सेसा ।
सुर नर मुनि जन माला फेरैं, ब्रह्मा बिस्नु महेसा ५
गन गंधर्प गलतान ध्यान में, तँतिस कोटि बिराजैं ।
सुर नि:तन्ती बीना सुनिये, अनहद नादू बाजैं ॥६॥
इला पिंगला पँग परी हैं, सुखमन झूलझुलन्ती ।
सुरत सनेही सब्द सुनत है, राग होत नि:तन्ती ॥७॥
पाँच पचीसो मगन भये हैं, देखा परमानंदा ।
मन चंचल नि:चल भया हंसा, मिले परम सुख सिंधा ८
नभ की डोर गगन सूँ बाँधे, तो इहाँ रहने पावे ।
दसो दिसा से पवन झकोरै, काहे दोस लगावै॥ ९ ॥
आठो बखत अल्हैया† बाजे, होता सब्द टंकोरा ।
गरीबदास यूँ ध्यान लगावै, जैसे चंद चकोरा॥ १०॥

(२)

बँगला सोई सत्त परवान, तामैं पारब्रह्म का ध्यान ॥टेक॥
साढ़े तीन करोड़ ब्रच्छ‡ हैं, या बँगले के पासा ।
सालेमार सरीर सरोवर, नौ लख बाग खुलासा ॥१॥
या बँगले के आगे कूआ, उरध-मुखी महमंता ।
मनुवा माली वारे ढारै, आठो बखत चलंता ॥ २ ।

*सब जगह । †एक रागिनी का नाम । यहाँ अनहद धुन से मतलब है । ‡रोम (रोआँ) की गिनती शास्त्रों में साढ़े तीन करोड़ लिखी है ।

इला पिंगला मद्ध सुखमना, ता पर एक सुराही ।
अमी महारस छाक परी है, पीवत होय रुसनाई॥३॥
रोसन तकिये रास होत है, बाजे बजैं अपारा ।
पाँचौं इन्द्री अस्थिर होई, घूमै मन मतवारा ॥ ४ ॥
संखौं कमल कलस की नाईं, सेत भमर भनकारैं ।
कोयल मोर पपीहा बोलैं, दादुर अधिक गुंजारैं॥ ५ ॥
बीना ताल पर पखावज बाजे, गावै गंधर्प रागी ।
सिव को तहाँ समाध लगी है, चीन्ह पड़ी बड़ भागी॥६॥
ध्रू प्रहलाद और नाम* कबीरा, नारद सुकदे ब्यासा ।
गोरख दत्त भये गलताना, देखा अजब तमासा ॥७॥
ब्रह्मा बिस्नु महेसर सेसा, ररंकार धुन होई।
गुफा† बीरज‡ यह मंत्र जो दीन्हा, राख सब्द कूँ गोई॥८॥
मान सरोवर ऊपर बँगला, जहँ हंस परमहंस खेलै ।
गरीबदास भवसागर सेती, पूरा सतगुरु बेलै§ ॥ ९ ॥

(३)

बँगला सोई सत्त निज सार, जामें पारब्रह्म दीदार॥टेक॥
दिल अंदर दीदार होत है, बाहर भीतर सोई ।
तिरबेनी असनान कीजिये, मल मुत्तर सब धोई॥१॥
बँगले आगे संख फुहारा, छूटैं सहसर‖ धारा ।
दिव्य दृष्ट तो देखत है सो, हर दम बारंबारा ॥ २ ॥
गंगा जमुना मद्ध सुरसती, पट्टन घाट फुहारा ।
कालिन्द्री काया परछाली¶, धन बड़ भाग हमारा॥३॥

*नामदेव । †गुप्त । ‡बीज मंत्र ओंकार सब्द का नाम है । §उबारे । ‖हज़ार । ¶धोई ।

इंदरदीन* महोदध* बाजै, रतनागर† लहराई ।
जगन्नाथ जगदीस विराजै, देखो क्यूँ ना भाई ॥ ४ ॥
हरद्वार हरि पैड़ी न्हाये, बद्रीनाथ बिलासा ।
द्वारावती‡ दरस नित होई, कर बृन्दावन बासा ॥५॥
लोहागिर* पुष्कर* पद परसे, गया* पिंड परधाना ।
अठसठ तीरथ हैं तन माहीं, मोच्छ मुक्त भये प्राना ॥६॥
कासी औ कांती* काया में, मोच्छ दायका माया ।
अकल अजोध्या आदि अनादं, सप्त पुरी दरसाया ॥७
अवन्तिकापुरी* अरथ के माहीं, सुरत निरत से जानी ।
गरीबदास साहब का बँगला, अजर अमर परवानी ॥८॥

(४)

बँगला खूब बना प्राचीन, जा में अरस§ कला दुरबीन टेक
बँगले आगे ड्योढ़ी लागी, पलकों दी चिक बंधा ।
छानवे कोटी मेघ माल‖ है, सब्द सिंध¶ गरजंदा ॥ १ ॥
बँगले आगे नग सरवर** है, तैंतिस कोट तपंता ।
सहस अठासी मुनिन्दर बैठे, सोहं जाप जपंता ॥२॥
बँगले आगे बाट†† बिहंगम, दो दर हैं भितरी के ।
ब्रह्म रंध्र‡‡ का घाट जहाँ है, साधू चढ़ै सु देखे ॥३॥
बँगले आगे नटवा§§ नाचै, ताहि लखै नहिं कोई ।
पड़ै गगन से धरती ऊपर, खंड बिहंड न होई ॥ ४ ॥

*तीर्थों के नाम । †समुद्र जिसमें मोती पैदा होता है । ‡द्वारिका । §सहसदलकँवल । ‖बादलों का समूह । ¶रत्न का सागर । **जहाँ तैंतीस कोट देवता तपस्या करते हैं । ††रास्ता । ‡‡शिवनेत्र, तीसरा तिल । §§मन ।

बँगले भीतर रतन अमोली, सेत पीत नहिं जरदा ।
बिनहीं चरनौं चलै चिदानंद, चसमौं आगे फिरदा ॥५॥
रिग जजु साम अथर्वन चारो, बँगले माहिं बिराजैं ।
सुछम* बेद से तारी लागी, अनहद नौबत बाजैं ।६॥
आसन पदम लगाय रहा है, हाथ कमंडल डंडा ।
ब्रह्मा आदि अनादं बैठे, चार बेद धुन खंडा ॥ ७ ॥
सुछम बेद से सुरत लगावै, सो सुरती महँ अंगा ।
गरीबदास बाहर क्यूँ भरमै, घटही अंदर गंगा ॥ ८ ॥

(५)

बँगला खूब बना है बेस†, यामें ररंकार धुन सेस ॥टेक
रोम रोम में नाम चलत है, अजपा तारी लागी ।
सुरत निरत पर अनहद बाजै, सुनते हैँ अनुरागी ॥१॥
मूल चक्र का घाट बाँध कर, सुखमन पवन अरोधै ।
परथम आदि गनेस मनावै, नाभि कमल कूँ सोधै ॥२॥
बंक नाल का घाट बिकट है, जहाँ खेचरी लावै ।
अमी महारस अमृत पीवै, अजर अमर हो जावै ॥३॥
दहिने गंगा बायेँ जमुना, मद्धु सुरसती धारा ।
उलटा मीन चढ़ै सरवर में, ऐसा खेल हमारा ॥ ४ ॥
हाथ न पैर पिंड नहिं प्राना, सुन सरवर में खेलै ।
बाँस बल्ली नौका नहिं लागै, (तो) कैसे भौंरा पेलै ॥५॥
दूरबीन ऐनक अनुसरी, पवन पिंड भर गोला ।
सुरत निरत की सुरँग लगावै, दरसै रतन अमोला ॥६॥

* सूक्ष्म । †उत्तम ।

कोट कोट दामिन दमकाहीं, गरजै सिंध समूचा ।
सीलवंत सैलानी जोगी, मिलै काछ का सूचा* ॥ ७॥
संखौं पदम झिलमिलै जोती, अगम पंथ बैराटा ।
गरीबदास सतगुरु के सारै†, उतरै औघट घाटा॥८॥

(६)

बँगला अजब बना है खूब, जामें पार ब्रह्म महबूब॥टेक॥
आगे नौलख पातुर नाचैं, ब्रह्मानंद रिझावैं ।
तेज पुंज की सुंदर नारी, अनहद मंगल गावैं ॥ १ ॥
पीतंबर फहरात तासु कै, सूहे‡ बस्तर साजैं ।
एक कान्ह औ नौलख गोपी, बँगले माहिं बिराजैं॥२
चंद सूर दो अधर चिरागा, हुकमी पौन औ पानी ।
सकल संत औ सकल साहबी, बँगले माहिं बिनानी३
पाँचो तत्त खवास खड़े हैं, हाजिर नाजिर जाके ।
तिरलोकी का राज रसातल, क्या कोड़ी धज लाखै§४
सब रतनन का रतन नाम है, नाम रतन कूँ जानै ।
इन्द्र का राज काग की बिष्टा, जासे उलटा तानै॥५
हीरा मोती जवाहिर ताईं, पारस पल्ले न बाँधै ।
सब्द सिंध चिंतामन साहब, सुरत गगन कूँ साधै॥६॥
चिंतामन पारस परमेसर, हिरदे माहिं बिराजै ।
गरीबदास ताही कूँ सेवै, जाका अबिचल राजै ॥७॥

---

*लँगोट का पक्का । †सहायता से, सहारे । ‡लाल । §पारब्रह्म की शोभा के आगे तीन लोक का राज जहन्नुम के बराबर और करोड़ों की सम्पत गर्द है । कोड़ीधज=कोटिध्वज (देखो नोट पृष्ट ९३)।

(१)

बँगला खूब बना है श्रैन* ।
जामें कलबिरछा† काम धेन ॥ टेक ॥

गंगा कोट त्रिबेनी संगम, कासी गया प्रयागा ॥
या बँगले में साहब बैठा, सब्द करै अनुरागा ॥ १ ॥
सँख सरसुती बहैँ अगोचर‡, गुपती गोप गियाना§ ॥
बँगले की पारस की पैँड़ी, पाया पद निरबाना ॥२॥
या बँगले में सेत गुमठ‖ है, ता मध अलख गुसाँई ॥
सेत छत्र सिर मुकुट बिराजै, दरसा नैनौँ माहीँ ॥३॥
निरबानी परवानी पद है, रूप बरन सूँ न्यारा ॥
बँगले में से उड़ै बिहंगम, खेलै अधर अधारा ॥ ४ ॥
अधर अधार अपार पुरुष है, दृष्ट मुष्ट नहिं आवै॥
सूछम रूप सरूप जान के, सेस सहस मुख गावै ॥५॥
उड़े बिहंगम अकल तरंगम, जाके मोह न माया ॥
सतगुरु भेदी भेद कहत हैँ, हम दिब दृष्ट लखाया॥६
जोजन संख पलक में पहुँचै, बिनही चरनौँ धावै ॥
अगमी डोर सुरत से खैँचै, फिर बँगले में आवै ॥७॥
सुरत सुहंगम मूल बिहंगम, ज्ञान ध्यान से ऊँचा ॥
घट मठ महतत¶ सेती न्यारा, कहा घाट बँध कूचा॥८॥
पिंड ब्रह्मंड से न्यारी जोती, बिन ही पँगन झूलै ।
गरीबदास धिरकार जनम कूँ, जो इस पद कूँ भूलै॥९

*सुन्दर । †कल्पवृक्ष । ‡इंद्रियोँ की पहुंच के परे । §ज्ञान ।
‖गुम्बज़ । ¶महातत्व ।

(८)

बँगला खूब बना दरहाल, जामेँ रतन अमोले लाल ॥टेक॥
जल की बूंद महल मठ कीन्हा, नख सिख साज बनाया।
या बँगले में गैबी खेलै, ना मूवा ना जाया ॥ १ ॥
या बँगले के चौसठ खंभा, पाँच पदारथ लागे।
तीन गुनन की गलियाँ माहीँ, कोइ सूते कोइ जागे ॥२॥
कोट उनंचा* पवन गुँजारैं, नौ नाड़ी से नेहा ।
धाम बहत्तर धारा नगरी, जासे लगा सनेहा ॥ ३ ॥
चौथे पद से महरम नाहीं, तीन गुनन में धोका।
चौथा पद चिंतामन साहब, सौदा रोकम रोका† ॥४॥
आलस नींद जम्हाई जोरा, कर्म नास होई।
सील संतोष बिबेक न चीन्हा, जनम अकारथ खोई ॥५॥
आसा त्रिस्ना बनी दुलहिनी, मनसा नारी सोई।
बँगले के दरवाजे बैठी, देख सहेली दोई ॥ ६ ॥
दूती दोइ दलेँ बिच खेलै, मोहे सुर नर सारे।
गन गंधर्प औ ज्ञानी ध्यानी, बँगले माहिं पछारे‡ ७
काम क्रोध औ लोभ मोह की, मदिरा प्याई भारी।
गरीबदास सतगुरु सौदागर, भौसागर से पारी ॥ ८ ॥

(९)

बँगला खूब किया बकसीस, साहब पारब्रह्म जगदीस॥टेक
या बँगले की चीन्ह परी है, बाँधा नौ दस मासा।
पैसा एक न मेहनत माँगै, धन दासन पति दासा ॥१॥

*उनचास। †नक़द, खरा। ‡गिरा दिया।

लख चौरासी बँगले छावे, न्यारी न्यारी भाँती ।
साच्छीभूत सकल सँग खेलै, कोड़ी कुंजर हाथी ॥२॥
या बँगले का तोल न मोलं, संख पदम झनकाई ।
या बँगले कूँ राख न सक्कूँ, सेस महेसर ताई ॥३॥
हीरे मोती झालर लगे और लालन की पाँती ।
या बँगले कूँ छाँड़ चलेंगे, ना कोई संग ना साथी ॥४॥
चंद सूर दो कलस बिराजैं, मध इक अजब फुहारा ॥
झलकै जोती बरषै मोती, जानै जाननहारा ॥ ५ ॥
काम धेनु अरु कल्प बृच्छ हैं, ये दो बँगले माहीं ॥
अठ सिध नौ निध परम पदारथ, अवगत अलख गुसाँई
या बँगले में बाघ बसत है, हंसा लेत गिरासी ॥
पकरै बाघ राग कूं चीन्है, ताहि मिलै अबिनासी ॥७
पकरा बाघ कबीर पुरुष ने, जड़िया तौक जंजीरं ॥
जाका बँगला अजर अमर है, धन पीरन सिर पीरं॥८
संख कलप जुग परलै जाहीं, बँगला डिगै न डोलै ॥
गरीबदास सतगुरु का बँगला, ना कुछ तोल न मोलै ॥९॥

(१०)

काया खोज लेरे, तो में रहता पुरुष अलेख ॥
बिभिचारिन का स्वाँग छाँड़ दे, क्या दिखलावै भेख।टेक।
मुक्ताहल की पैंठ लगी है, चौपड़ के बाजार ॥
ब्रह्म सहर बेगम पुर चलिये, अवगत नगर अपार ॥१॥
अष्ट कमल दल भींजन लागे, बरषत अमृत नीर ।
सोहं हंसा किया पयाना, मानसरोवर तीर ॥ २ ॥

बिन बादल बिन बिजली चमकै, बूठै[*] सुन्न फुहार ।
संख कला झलकंती जोती, गगन मँडल गुलजार ॥३॥
इस काया में नीझर झरते, औंडे[†] दरिया कूप ।
सीसी[‡] संख[§] फिरैं सुर पीवैं, प्याले अजब अनूप ॥४॥
इस काया में रासमंडल है, बाजैं अनहद तूर ।
सोहं हंसा सिंध मिले हैं, झिलमिल नूर जहूर ॥ ५ ॥
ताल मृदंग पखावज बाजैं, तुरही तूर अनंत ।
सब्द अतीत[||] परम पद पाया, चीन्हा निरगुन तंत[¶] ॥६॥
इस काया में घाट पटन है, मल मूतर सब धोई ।
आपा मेट भेट साहब कूं, बहुर न आवन होई ॥ ७ ॥
सीखे सुने कहो क्या होई, मन पवना नहिं नेस[**] ।
औघट घाट बाट है बंकी, दुर्लभ देस बिदेस ॥ ८ ॥
ज्ञान ध्यान जिस धाम न पहुंचे, साखी सब्द सरीर ।
सुन्न असुन्न परम सुन चीन्हौं, औंडी[††] मँजिल कबीर॥९॥
सप्त सुन्न पर संखा झालर, अछर धाम की डोर ।
मकर तार की बीन चीन्ह कर, होना गारतगोर ॥१०॥
पाँच तत्त तीनों गुन नाहीं, धर[‡‡] अंबर[§§] नहिं धौल[||||] ।
चन्द्र सूर नहिं पावक पानी, बंकी नगरी पौल ॥११॥
मेटो खोज बोझ सब डारो, मिलिहो निरगुन तान ।
दास गरीब परम रँग भीना, चीन्हा पद निरबान ॥१२॥

---

[*] बरसै । [†] गहिरे । [‡] बोतल । [§] अनगिनत । [||] निर्मोया । [¶] तत्व । [**] नेष्ठा । [††] गहिरी, अड़बड़ । [‡‡] धर = धरा अर्थात पृथ्वी । [§§] आकाश । [||||] धवल के अर्थ सपेद के हैं—यहाँ धवलागिरि से मतलब हो, या धौल=धूल अर्थात परमाणु रूप माया से । द्वार ।

॥ राग रामकली ॥

राम सुमिर राम सुमिर राम सुमिर हंसा ॥
भक्ति जान ज्ञान ध्यान छाँड़ो कुल बंसा ॥ टेक ॥
कोट करम भरम जारि पार तोहि उतारै ॥
मुक्ति लोक पाय मोछ नाम जो उचारै ॥ १ ॥
सुरत सिंध कोट चंद्र झलकै पल माहीं ॥
पद निर्वान है अमान आदि अंत नाहीं ॥ २ ॥
निराकार अघर धार वार पार नाहीं ॥
व्यापक महबूब खूब धूप है न छाहीं ॥ ३ ॥
संख तूर दर जहूर झिल मिल झिल रंगा ।
घुरै नाद संख साध चरन कोट गंगा ॥ ४ ॥
अरस कुरस नूर दरस तेज पुंज देखा ।
कोट भानु साँच मानु रोम रोम पेखा ॥ ५ ॥
अमृत रस अमी पीव खुरदनी खुसाली ।
प्याले मुसताक पाक लालन सिर लाली ॥ ६ ॥
नाद बिन्द घट अकार देह गेह नाहीं ।
निरमल निरदंद अैन, देखतही होत चैन, पलकन के माहीं ॥ ७ ॥
आदि मूल रतन फूल सेत पद सुभाना ।
गरीबदास जहाँ बास दरस में दिवाना ॥ ८ ॥

(२)

राम सुमिर राम सुमिर राम सुमिर लोई ।
सतगुरु उपदेस दीन्ह भक्ति बीज बोई ॥ टेक ॥

काम क्रोध लोभ मोह सत्रु हैँ तुम्हारे ।
हरष सोग राग दोष पकर क्योँ न मारे ॥ १ ॥
तीन चीन्ह पाँच मार पकरो मठधारी* ।
पुत्र तो पचीस संग सैन है अपारी ॥ २ ॥
पाँच नार घट मँझार मन की पटरानी ।
द्वादस दल कोट कटक सैन† है बिरानी ॥ ३ ॥
साहुकार पकर लीन्ह लूटे गढ़ चोरा ।
आतम तो अनाथ सुनो राम बाप मेरा ॥ ४ ॥
मन के सब राज पाट तीन लोक माहीँ ।
आतम तो अनाथ जीव सुनो हो गुसाईँ ॥ ५ ॥
फंद काट करो साँट‡ मौज मेहरबाना ।
अरज तो कबूल होय साहब रहमाना§ ॥ ६ ॥
साहब दरबार बीच कूके बंदिजादा‖ ।
महजर¶ क्यूँ न सुनो राम पूछ हो फिलादा** ॥ ७ ॥
समरथ जगदीस ईस, सरन आया तोहीँ ।
ठाढ़ा दरबार तोरे सुनो राम दोही†† ॥ ८ ॥
अर्थ धर्म काम मोच्छ पूरन सब काजा ।
गरीबदास सरन आया बाप राम राजा ॥ ९ ॥

(३)

राम सुमिर राम सुमिर राम सुमिर बौरे ।
हर दम तो अजपा जाप साहबै भजो रे ॥ टेक ॥

*महंत यानी मन । †फ़ौज । ‡मेला । §दयाल । ‖दास । ¶अर्ज़ी ।
**फ़र्याद । ††दुहाई ।

इंद्री घट पाँच भूत, दूत हैं दिवाने ।
पच्चिस परकिर्त* लार जाने तीन जाने ॥ १ ॥
काम सहर क्रोध कहर लोभ लहर ऊठैं ।
मोह के तो परे फंद कैसे कर टूटैं ॥ २ ॥
सेन दल अपार यार एती ठकुराई ।
कैसे कर पड़ा जाय गढ़ सुरंग लाई ॥ ३ ॥
अकड़ी† हठवान‡ बाँका जोधा मन राजा ।
कोट तो निसान घुरैं बजैं अनँत बाजा ॥ ४ ॥
सेन दल अपार सजे संख लहर लहरी ।
खसिया§ मन राज करै मरद है न मेहरी‖ ॥ ५ ॥
सुरग और पताल मिरत तिहूँ लोक लूटे ।
सतगुरु की सरन आये सोई जान छूटे ॥ ६ ॥
काया गढ़ नहीँ तेरा दैँह साँच मानी ।
भाड़े¶ की दुकान यार सो तो है बिरानी ॥ ७ ॥
दूने तीने नाहिँ कीन्हे हाट बीच टोटा ।
पकरैँगे जम जहूद तोरैँगे लँगोटा ॥८॥
होयगा बेवतन** हंस देह जार दीनी ।
गरीबदास कहाँ बास पंथ खोज मीनी ॥ ९ ॥

(४)

राम सुमिर राम सुमिर, राम सुमिर मीता ।
बिन सतगुरु ज्ञान ध्यान, खाली है सलीता†† ॥टेक॥

---

* प्रकृति । † हेकड़ । ‡ हठीला । § बधिया, हिजड़ा । ‖ स्त्री ।
¶ किराया । ** बिना घर का । †† बोरा ।

हाड़ चाम सकल गाम, गंद है खलीता* ।
पाक तो बिसार दीन, बरहना जरीता† ॥१॥
दम का सुमार कीन, नाम क्यूँ न लीता ।
इला पिंगला बिचार, सुखमना पलीता‡ ॥२॥
सील और सँतोष आन, दया धरम कीता ।
काम क्रोध लोभ मोह, सत्रु क्यौं न जीता ॥३॥
साहब दिल से बिसार, कौन जुलम कीता ।
दुनिया गुफतार§ यार, छाँड़ दे अनीता ॥४॥
नाहीं वह स्याम सेत, लाल है न पीता|| ।
आवै नहिं पारख¶, पढ़ो कोट ज्ञान गीता ॥५॥
पिंड प्रान अरप दीन, सतगुराँ सरीता** ।
गरीबदास पावै यूँ, ब्रह्म पद अतीता ॥६॥

(५)

राम सुमिर राम सुमिर, राम सुमिर ले रे ।
जम और जहान जीत, तीन लोक जे रे ॥ टेक ॥
इंद्री अदालत चोर, पकड़ो मन अहि†† रे ।
अनहद टंकोर घोर, सुनै क्यूँ न बहिरे ॥१॥
सुरत निरत नाद बिंद, मन पवना गह रे ।
उनमुनी अलेल‡‡ रूप, निराकार लह रे ॥२॥
धनुष§§ ध्यान मार बान||||, दुरजन से फहरे¶¶ ।
देखत के सीत कोट, भरम बुर्ज ढह रे ॥३॥

*थैली, झोला । †नंगा जलाया जायगा । ‡बत्ती जिस से रंजक में आग लगाते हैं । §निरी बात, कहानी । ||पीला । ¶परख, जाँच । **शरन ली । ††साँप । ‡‡बेपरवाह । §§कमान । |||| तीर । ¶¶ दूर रहो, बचो ।

साँचे से प्रीत कीन झूठा मन मह* रे ।
कहत है गरीबदास, कुटिल बचन सह रे ॥४॥

॥ राग असावरी ॥

मन तू चल रे सुख के सागर,
जहाँ सब्द सिंध रतनागर ॥ टेक ॥
कोट जनम जुग भरमत होगये,
कछू न हाथ लगा रे ।
कूकर सूकर खर भया बौरे,
कौवा हंस बिगारे ॥ १ ॥
कोट जनम जुग राजा कीन्हा,
मिटी न मन की आसा ।
भिच्छुक होकर दर दर हाँडा†,
मिला न निरगुन रासा ॥ २ ॥
इन्द्र कुबेर ईस की पदवी,
ब्रह्मा बरुन धर्मराया ।
बिस्वनाथ के पुर कूँ पहुंचा,
बहुर अपूठा‡ आया ॥ ३ ॥
संख जनम जुग मरते हो गये,
जीवत कूँ न मरै रे ।

*मथ लो अर्थात छाछ की तरह अलग कर दो । †भरमा । ‡उलटा ।

द्वादस मद्ध महल मठ बौरे,
बहुर न देह धरै रे ॥ ४ ॥
दोजख भिस्त सबै तैं देखे,
राज पाट के रसिया ।
तिरलोकी से तिरपत नाहीं,
यह मन भोगी खसिया* ॥ ५ ॥
सतगुरु मिलै तो इच्छा मेटै,
पद मिल पदहिं समाना ।
चल हंसा उपदेस पठाऊँ,
जहँ आद अमर अस्थाना ॥ ६ ॥
चार मुक्ति जहँ चंपी करिहैं,
माया हो रहि दासी ।
दास गरीब अभय पद परसे,
मिले राम अबिनासी ॥ ७ ॥

(२)

मन तूँ सुख के सागर बस रे, और न ऐसा जस रे ॥टेक॥

सब सोने की लंका होती, रावन से रन धीरं ।
एक पलक में राज बिराजी, जम के पड़े जँजीरं ॥१॥

*हिजड़ा ।

दुर्योधन से राजा होते, संग इकोतर* भाई ।
ग्यारह छोहनि संग चलै थी, देह गीध ने खाई ॥२॥
साठ हजार सुभट† के होते, कपिल मुनीस्वर खाये‡ ।
एकै पुत्र उत्तानपात के,§ परमातम पद पाये ॥३॥
राम नाम पहलाद पढ़े थे, हिरनाकुस नहिँ भाये ।
नरसिँघ रूप धरे नारायन, खंभ फार कर आये॥ ॥४॥
नामदे नाम निरंजन राते, जाकी छान छवाई ।
एंक पलक में देवल फेरा, मितक गऊ जिवाई¶ ॥५॥
कासीपुरी कबीरा होते, ताहि लखो रे भाई ।
जहँ केसो बनजारा उतरा, नौलख बालद आई ॥६॥
कनक जनेऊ कन्ध दिखाया, भक्ति करी रैदासा ।
दासगरीब कौन गत पावै, मगहर मुक्ति बिलासा ॥७॥

(३)

मन तूँ मान सरोवर न्हा रे, इहाँ न भटका खारे॥ टेक॥
सूरज मुखी फूल जहँ फूलै, संख पदम उजियारा ।
गंगा जमुना मद्ध सरसुती, तिरबेनी की धारा ॥१॥
जहाँ कमोदनि चन्द्र उगत हैँ, कमल कमल मध तूरा** ।
अनहद नाद अजब धुन होहीँ, जानै सतगुरु पूरा ॥२॥
औघट घाट बिषम है दरिया, न्हावै संत सुजाना ।
मोच्छ मुक्ति की परबी लै रे, साखी है ससि भाना ॥३॥

*एक सौ एक । †जोधा । ‡देखो नोट पृष्ठ १०३ । §देखा ध्रुव की कथा नोट पृष्ठ ३२ । ||देखो नोट पृष्ठ ८८ । ¶देखो नोट पृष्ठ ८४-८५ । **तुरही ।

जहाँ उहाँ हंस कुतूहल करते, मोती मुक्ता खाहीं ।
ऐसा देस हमेस हमारे, अमृत भोजन भाहीं ॥४॥
संखौं लहर मेहर की उपजै, कहर नहीं जहँ कोई ।
दास गरीब अचल अबिनासी, सुखका सागर सोई ॥५॥

(४)

बाबा बिकट पंथ रे जोगी,
तातैं छाँड़ सकल रस भोगी ॥टेक॥

पर्थम सिद्धि गनेस मनावौं, मूल कमल की मुद्रा ।
किलियं जाप जपो हरि हीरा, मिटै करम सब छुद्रा* ॥१॥
कुरम वाय पर सेस वाय† है, तासु होत उदगारं‡ ।
दो कूँ जीत जनम जुग जोगी, अवगत खेल अपारं ॥२॥
नाभि कमल में नाद समोवो, नागिन निद्रा मारो ।
दो फुंकार संखिनी जीतो, उरधै नाम बिचारो ॥३॥
हिरदे कमल सुरत का संजम, निरत कला निरस्वासा ।
सोहं सिंध सैल पद कीजै, ऐसे चढ़ो अकासा ॥४॥
कंठ कमल से हर हर बोलै, षोड़स कला उगानी ।
यह तो मध मारग सतगुरु का, पंथ बूझ ब्रह्मज्ञानी ॥५॥
त्रिकुटी मद्धे मूरत दरसै, दो दल दरपन भाहीं ।
कोट जतन कर देखा भाई, बाहर भीतर नाहीं ॥६॥
वह तो सिंध दोऊ से न्यारा, कहो कहाँ ठहराये ।
सुन्न बेसुन्न मिलै नहिं भौंरा, कहाँ रहत घर पाये ॥७॥

*नीच । †कुरम और नाग (=सेस) दो वायुओं के नाम हैं ।
‡डकारना ।

अनहद नाद बजावो जोगी, बिना चरन चल नगरी।
काया कासी छाँड़ चलोगे, जाय बसो मन मथरी ॥८॥
धरती धूत अकार न पाऊँ, मेरु दंड पर मेला।
गगन मँडल में आसन करहूं, तो सतगुरु का चेला॥९॥
तिल परमान ब्रह्म दरवाजा, तिस घाटी ले जाऊँ।
चींटी के पग हस्ती बाँधूं, अधर धार ठहराऊँ ॥१०॥
दखिन देस मैं दीपक जोऊँ, उत्तर धरूँ धियाना।
पच्छिम देस में देवल हमारा, पूरब पंथ पयाना ॥११॥
पिंड ब्रह्मंड दोऊ से न्यारा, अगम ज्ञान गोहराऊँ।
दास गरीब अगम गत आपै, सिंधै सिंध मिलाऊँ ।१२।

(५)

संतो मानो मोर सँदेसा, तातैं बहुर न रहै अंदेसा ॥टेक॥
अधर गंग इक अधर सरोवर, अधर पुहुप गुलजारा।
सूरज मुखी संख सुर सोभा, ऐसा देस हमारा ॥१॥
षटकोन चक्र कूँ चीन्ह पियारे, अकस* अरस अनादं।
तुरही रूप बंकड़ा साहब, लीला अगम अगाधं ॥२॥
हंस मोर के मद्ध चंद्र है, कलँगी कोटि बिराजै।
जाके ऊपर अरस गुमठ है, तीन कलस जहँ साजै ॥३॥
परानंदनी† कामधेनु है, गोमुख गंग कहावै।
कल्प रूप साहब सरबंगी, मन बांछित फल पावै।४॥
सुन्न सलहली धजा फरक्कैं, ध्यान धरै कोई बीना।
अललपंख ज्यूँ करै पयाना, खोज न पावै मीना ॥५॥

*छाया। †परम आनंद या रस की खान।

त्रिकुटी कमल पर सेत गुमठ है, जा मध भँवर बिराजै।
दास गरीब कहै रे संतो, सब्द अनाहद बाजै ॥६॥

(६)

संतो निज पद अधर बिवाना, जा मूरत पर कुरबाना॥टेक
सेत छत्र सिर मुकुट मनोहर, बना मुकैसी* चीरा ।
संख चक्र गदा पद्म बिराजै, दामन दमकै हीरा ॥१॥
जरीबाफ झिलमिल झिलकंता, पीतंबर परकासा ।
हाजिर नाजिर देख अरस में, अवगत चौंर खवासा॥२॥
कच्छ मच्छ औ कुरम धौल से, सेस पार नहिं पाई ।
बिना दस्त जहँ चौंर होत है, हम देखा रे भाई ॥३॥
सत्तर खान बहत्तर उबरे, सिव ब्रह्मा से रागी ।
नारद नाम कबीरा गावै, सुरत सब्द में लागी ॥४॥
राग बिहंग भंग नहिं होई, बंधा रहत समीरं ।
दास गरीब बजर पट खोले, सतगुरु मिले कबीरं ॥५॥

(७)

बिसमिल कित से आई काजी बिसमिल कित से आई ।
ताते बोलो नाम खुदाई† ॥टेक॥
उहाँ तो लोह लुहार नहीं रे, करद‡ गढ़ी किन्ह भाई ।
अहरन§ नाहिं हथौड़ा नाहीं, बिन आरन‖ कहँ ताई ॥१॥

*कारचोबी । †क़ाज़ी तुमको ख़ुदा की सौगंद बताओ कि ज़िबह करने का दस्तूर कहाँ से लाये । ‡ छुरी । § निहाई । ‖भट्ठी ।

जाम* भेड़ी का दूध पिवत हो, दही घिरत† बहु खाई।
जा कूँ फेर हलाल करत हो, लेकर करद कसाई ॥२॥
गोस्त माटी‡ चाम उधेरा, रूह कहाँ पहुंचाई ।
उस दरगह की खबर नहीं है, कौन हुकम से ढाई§॥३॥
हक हक करके मुल्ला बोलै, मसजिद बाँग सुनाई ।
तीसौं रोजे खून करत हो, खोज न पाया राई‖ ॥४॥
सुअर गऊ की एकै माटी, आतम रूह इलाही ।
दास गरीब एक वह साहब, जिन यह उमत¶ उपाई ॥५॥

(८)

दिल ही अन्दर हुजरा काजी दिल ही अन्दर हुजरा।
कर ले उस साहब से मुजरा ॥टेक॥
मका मदीना दिल ही अन्दर, काबे कूँ कुरबाना ।
काहे लेट निमाज करत हो, खोजो तन अस्थाना ॥१॥
सत्तर काबे देख नूर के, खोल किवारी झाँकी ।
ता पर एक गुमठ है गैबी, पन्थ डगरिया बाँकी ॥२॥
हक हक करके मुल्ला बोलै, काजी पढ़ै कुराना ।
जिन कूँ वह दीदार कहाँ है, काटैं गला बिराना ॥३॥
अरस कुरस** में अलह तखत है, खालिक बिन नहिं खाली।
वे पैगम्बर पाक पुरुष थे, साहब के अबदाली†† ॥४॥
मुहमद ने नहिं गोस्त खाया, गऊ न बिसमिल कीती ।
एक बेर कहा मनो‡‡ मुहम्मद, ता पर एती बीती ॥५॥

*मा । †घी । ‡देह । §मारा । ‖राई के बराबर, रत्ती भर । ¶सृष्टि ।
**अर्श और कुर्सी दो स्थान अल्लाह के हैं। ††भक्त, दास । ‡‡मौत, क़तल ।

नबी मुहम्मद नमस्कार है, राम रसूल कहाया ।
एक लाख अस्सी कूँ सौगँद, जिन नहिँ करद चलाया॥६॥
वेई मुहम्मद वेई महादेव, वेई बिसुन वेई ब्रह्मा ।
दास गरीब दूसरा को है, देखो अपने घर माँ ॥७॥

(९)

कोई बाँका सूरा, लड़त बेहद मैदाना ॥टेक॥
नैनन की बंदूक बनी है, स्रवन बरूद समाना ।
काल बली को मार गिरावो, सुरत की गोली ताना ॥१॥
मन को टेर* दया को बखतर, सुरत कटारी ठाना ।
पाँच पचीस मिल टक्कर मारो, अमर लोक अस्थाना ॥२॥
ईथर पाथर कभी न पूज्यो, तीरथ बर्त न माना ।
सत्त सब्द में रह्यो समाई, तब मेरो मन जाना ॥३॥
जूझैगा कोई परम सूरमा, घाव लगै निर्बाना ।
दास गरीब कबीर का चेला, ज्यूँ का त्यूँ ठहराना ॥४॥

(१०)

जो कोई ना मानै ना मानै,
जाकूँ अजाजीलै रानै† ॥टेक॥
करै अचार बिचार असंभो, पूजत जड़ पाषानै ।
पाती तोर चढ़ावत अँधरे, जीवत जी कूँ भानै‡ ॥१॥
पिंड प्रदान करै पितरोँ के, तीरथ जग औ दानै ।
बिना बंदगी मोच्छ नहीँ रे, भूल रहे सुर§ ज्ञानै ॥२॥

*टोपा, खोद । †उसको शैतान गिरावै । ‡ मारै । § देवता ।

सुकदे स्यू का तंत सुना है, भक्ति दई धिग ता ने।
सतगुरु जनक विदेही भेंटे, पद मिल पदै समाने* ॥३॥

अकथ कथा कुछ कही न जाई, देखत नयन सिराने†।
प्रबल बली दरियाव बिहंगम, लाय ले चोट निसाने॥४॥

पंडित बेद कहै बहु बानी, काजी पढ़ै कुराने।
सुअर गऊ के दोय बतावै, दोनों दीन दिवाने ॥५॥

एकहि मट्टी एकहि चमड़ा, एकहि बोलत प्राने।
जिभ्या स्वादै मारत है नर, समुझत नहीं हैवाने ॥६॥

मुरगी बकरी कुकड़ी खाई, कूके बंग मुलाने।
जैसा दरद आपने होवै, वैसा दरद बिराने ॥७॥

मन मक्का की हज्ज न कीन्ही, दिल काबा नहिं जाने।
कैसी काजी कजा‡ करत हो, खाते हैा हलवाने§ ॥८॥

जा दिन साहब लेखा माँगे, द्यो क्या ज्वाब दिवाने।
ऐसा कुफर तरस नहिं आवै, काटै सीस खुराने ॥९॥

उस पुर सेती महरम‖ नाहीं, अनहद नाद घुराने।
दास गरीब दुनी¶ गइ दोजख, खावै गालि गुराने** १०

(११)

अवधू पाया अति आरूढ़ं,
कोट उनंचा††काहे नाचा तन ढूँढ़े में ढूँढ़ं॥टेक॥

---

*शुकदेव जी ने पहिले भक्ति का निरादर किया था और ज्ञान ही को मानते थे, देखो नोट पृष्ठ ६९ और ९३ ९४। †शीतल हुए। ‡पाँचो वक्त की नमाज़ पढ़ना। §बकरी का बच्चा। ‖भेदी। ¶दुनिया। **गाली गलौज। ††उनचास।

पोथी थोथी काहे ढूँढो, सुन रे पंडित मूढं ।
लंबी जटा अटा क्यूँ बाँधै, काहे मुड़ावै मूड़ं ॥१॥
जल पापान तरा नहिं कोई, सूवा सेम्हर ढूँड़ं* ।
वह नग हीरा परखा नाहीं, क्यूँ खोजत है जूड़ं ॥२॥
जल मृग त्रिसना सृष्टि भुलानी, भूल रहा जग भूड़ं ।
नाम अभय पद निःचै निपजै, बीज परे ज्यूँ खूड़ं† ॥३॥
बिन आकार अपार पुरुष है, बाल वृद्ध नहिं बूढं ।
दास गरीब अचल अबिनासी, अवगत मंतर गूढं ॥४॥

(१२)

संतो मन की माला फेरो,
यह मन बाहर जात हेरो ॥टेक॥
तीन लोक औ भवन चतुर्दस, एक पलक फिर आवै ।
बिनहीं पंखौं उड़ै पखेरू, याका खोज न पावै ॥१॥
तत की तसबी‡ सुरत सुमिरनी, दृढ़ के धागे पोई ।
हर दम नाम निरंजन साहब, यह सुमिरन कर लोई २
किलियं ओअं हिरियं सिरियं, सोहं सुरत लगावै ।
पंच नाम गायत्री गैबी, आतम तत्त जगावै ॥३॥
ररंकार उच्चार अनाहद, रोम रोम रस तालं ।
कर की माला कौन काम जब, आतम राम अबदालं§ ॥४॥
सुरग पताल सृष्टि में डोलै, सर्ब लोक सैलानी ।
यह मन भैरो भूत बितालं, यह मन अलख बिनानी ॥५
यह मन ब्रह्मा बिसुन महेसं, इन्द्र बरुन कुबेरं ।
मनही धर्मराय है भाई, सकल दूत जम जेरं‖ ॥६॥

*डोंड़ी । †हराई, रिघाई । ‡माला । §भक्त । ‖परास्त करना ।

मनही सनक सनन्दन बाला, गैारज और गनेसा।
मनही कच्छ मच्छ कूरंभा, धौल धरन अरु सेसा ॥७॥
मनही गोरख दत्त दिगंबर, नारद सुकदे व्यासा।
मनही बलि बावन ह्वै आया, मन का अजब तमासा८
मनही ध्रू प्रहलाद भभीखन, मन का सकल पसारा।
मनही हरि हीरा हिरनाकुस, मन नरसिंघ औतारा॥९॥
मन सुग्रीव बालि बल अंगद, रावन राम रँगीला।
मनही नौ औतार धरत है, मन की अवगत लीला१०
मनही लछमन हनूमान है, मनही चेरी सीता।
मनही चारो बेद विद्या सब, मन भागवत औ गीता११
मनही परसराम परसोतम, छत्री किये निछत्री* ।
मनही कपिल देव देहूती†, मनही अद्या अत्री॥१२॥
मनही चंद सूर तारागन, मनहीं पानी पौना।
मनही लख चौरासी डोलै, मनहीं का सब गौना॥१३॥
मन तँतीसो कोट देवता, मनही सहस अठासी।
मनही थावर जंगम जोनी, मनहीं सिध चौरासी॥१४॥
मनही कीट पतंग भुवंगा, मन जोनीं जगदीसं ।
मन के ऊपर निज मन साहब, ताहि नवाऊँ सीसं॥१५॥
निज मन सेती यह मन हूआ, धर आया अनंत सरीरं।
दास गरीब अभय अबिनासी, ता मिल रहे कबीरं१६

(१३)

पार किनहुं नहिं पाये संतो, पार किनहुं नहिं पाये।
जुग छत्तीस रीत नहिं जानी, ब्रह्मा कमल भुलाये॥टेक॥

*नाश। †कपिल देव की माता का नाम।

चार अंड ब्रह्मंड रचाने, कूरम धौल धराये ।
कच्छ मच्छ सेसा नारायन, सहस मुखी पद गाये॥१॥
चार बेद अस्तुती करत हैं, ज्ञान अगम गोहराये ।
अकथ कथा अच्छर निःअच्छर, पुस्तक लिखा न जाये॥२॥
सुरत निरत से अगम अगोचर, मन बुध रहे थकाये।
ज्ञान ध्यान से अधिक परेरा, क्या गाऊँ रामराये॥३॥
नारद मुनी गुनी महमंता, नर से नारि बनाये[*] ।
एक पलक परपूरन साहब, पूत बहत्तर जाये[*] ॥४॥
नौ लख बोरी कासी आई, दास कबीर बढ़ाये[†] ।
दास गरीब अगम अनुरागी, पद मिल पदै समाये॥५॥

(१४)

अवधू लेत न मन का लाहा[‡], चीन्हो ज्ञान अगाहा[§]। टेक।
कासी गहन बहन भये[‖] प्रानी, प्राग न्हात है माहा[¶]
बिना नाम जोनी नहिं छूटै, भरमै भूल भुलाहा ॥१॥
सहस मुखी गंगा नहिं न्हाते, खोदैं ऊजड़ बाहा[**] ।
नारद ब्यास पूछ सुकदे कूँ, चारो बेद उगाहा[††] ॥२॥
पंथ पुरातम खोज लिया है, चाले अवगत राहा ।
सुकदे ज्ञान सुना संकर का, मिटी न मन की दाहा ॥३॥
दो तपिया गुन तप कूँ लागे, बंदे हूहू हाहा[‡‡] ।
लगा सराप परे भौसागर, कीन्हे गज अरु ग्राहा॥४॥

---

[*]देखो नोट पृष्ठ ७३-७५। [†]देखो नोट पृष्ट ३४-३५। [‡]लाभ। [§]गूढ़। [‖]बहे। [¶]महीने भर। [**]नहर। [††]संग्रह किया।

[‡‡]हूहू और हाहा दो गंधर्वों के नाम हैं जो गान विद्या में बड़े निपुन थे। दोनों में झगड़ा हुआ कि कौन बढ़ कर गाता है इस लिये वे निर्नय कराने को देवल ऋषि के पास गये। देवल ऋषि ने

सिव संकर के तिलक किया है, नारद सोधा साहा* ।
ब्रह्मादिक ने चौरी रचिया, किया गौर का ब्याहा ॥५॥
इक सौ आठ गये तन परले, बहुर किया निरबाहा ।
सिव के संग गौरजा उधरी, मिट गया काल उसाहा† ॥६॥
ज्यूँ सर्पा की पूँछ पकर कर, अंदर उलटा जाहा ।
नीर कबीर सिंध सुखसागर, पद मिल गया जुलाहा ॥७॥
हमरा ज्ञान ध्यान नहिं बूझा, समझ न परी अगाहा ।
दासगरीब पार कस उतरै, भैंटा नहीं मलाहा ॥ ८ ॥

॥ राग बिलावल ॥

रब‡ राजिक§ तू महरमी‖, करतार बिनानी ।
अवगत अलख अलाह तू, कादिर परवानी ॥ टेक ॥

उन दोनौं का गाना सुन कर कहा कि हाहा का गाना बढ़ कर है इस पर हूहू हुज्जत करने लगा कि कैसे वह बढ़ कर है । मुनिजी क्रोध करके बोले कि तुम ने तो जुबान ग्राह (याने मगर) की तरह पकड़ ली इस लिये ग्राह होगे । इसी शाप से हूहू ने मगर का जन्म पाया ।

राजा इन्द्रद्युम्न द्रविड़ देश का राजा अगस्त्य मुनि का शिष्य था । एक दिन जब राजा पूजा पर था गुरूजी उस के यहाँ गये । राजा ईश्वर की पूजा का निरादर समझ कर गुरूजी के लिये आसन से नहीं उठा जिस पर मुनिजी ने शाप दिया कि तुम गज (हाथी) की तरह बैठे रह गये इस से हाथी हो जाव जिस से राजा ने हाथी की योनि पाई ।

कृष्णावतार होने पर इन दोनौं का उद्धार हुआ—देखो गज और ग्राह की कथा पृष्ठ २४ में ।

*लगन । †वसवास, शंका । ‡साहब । §अन्नदाता । ‖सर्वज्ञ ।

खालिक मालिक मेहरबाँ, सरबंगी स्वामी ।
नि:चल अचल अगाध तू, निरगुन नि:कामी ॥१॥
राम रहीम करीम तू, कुदरत से न्यारा ।
गंध पुहुप ज्यूँ रम रहा, फूला गुलजारा ॥२॥
पूरन ब्रह्म परम गुरू, अकाल अबिनासी ।
सब्द अतीत बिहंगमा, किस काल उदासी ॥३॥
अनुरागी नि:तत्त कूँ, तन मन सब अरपूँ ।
सीस करूँ तिस वारने, चित चंदन चरचूँ ॥४॥
उस साहब महबूब कूँ, कर हर दम मुजरा ।
चित से नेक न बीसरूँ, दिल अंदर हुजरा[*] ॥५॥
पत-राखन तू परद-पोस[†], साहब दिल दाना ।
मीरा[‡] मेरे मेहर कर, पेखूं खिलखाना[§] ॥६॥
नूर निहारूँ नजर से, नैनौं भर देखूँ ।
मूरत सूरत सकल कूँ, चसमौं मैं पेखूँ ॥७॥
तेज पूँज की सेज है, सुन मंडल सीरा ।
अदली तखत खवास है, जहँ आप कबीरा ॥८॥
कुंभक ऊपर कुंभ है, गागर पर गगरी ।
संत बिबेकी पहुँचसी, उस अवगत नगरी ॥९॥
अवगत नगर निधान है, बेगमपुर बासा ।
बिरह बियोगी बिंध रहै, जहँ सब्द निवासा ॥१०॥
तन मन मिरतक ह्वै रहै, दिल दुई उठावै ।
सब्द समुंदर सिंध मैं, ले अंग मिलावै ॥११॥

[*] कोठा । [†] ऐब ढकने वाला । [‡] स्वामी । [§] ख़िलवत ख़ाना ।
[‖] उत्तम भूमि ।

खोजी खोज न पावहीँ गुरु भेद बिचारं ।
चार बेद चितवत भये, भूले भरम अचारं ॥१२॥
पुरान अठारह गम नहीँ, क्या गावै ज्ञानी ।
मौनी महल न पावहीँ, बिन सतगुरु बानी ॥१३॥
अष्ट योग जाने नहीँ, षट कमलकसीसं ।
पाँचो मुद्रा वार हैँ, पारख जगदीसं ॥ १४ ॥
बावन अच्छर ना चढ़ै, वह बिरहा बंगी ।
दास गरीब पिछानिया, सो हर दम संगी ॥ १५ ॥

(२)

मतवालोँ के महल की, सूफी क्या पावै ।
अरस खुरदनी* खोर है, सतगुरु बतलावै ॥ टेक ॥
सुन्न दरीबे हाट है, जहँ अमृत चुवता ।
ज्ञानी घाट न पावहीँ, खाली सब कथिता ॥ १ ॥
टाँक† बिकै नहिँ मोल कूँ, जो तुलै न तोला ।
कूँची‡ सब्द लगाय कर, सतगुरु पट खोला ॥ २ ॥
फूल झरै भाठी सरै§, जहँ फिरैँ पियाले ।
नूर महल बेगमपुरा, घूमैँ मतवाले ॥ ३ ॥
त्रिकुटी सिंध पिछान ले, तिरबेनी धारा ।
बेड़े‖ बाट बिहंगमी, उतरै भौ पारा ॥ ४ ॥
अठसठ तीरथ ताल हैँ, उस तरवर माहीँ ।
अमर कंद¶ फल नूर के, कोइ साधू खाहीँ ॥ ५ ॥

*खाने के लायक़ । †चार माशे का बाट । ‡कुंजी । §चुवै । ‖छोटी नाव । ¶खाने की पुत्ती ।

नौ सै नदी अचूक* हैं, उस मंझ तलाई ।
मेरुडंड कूँ छेद कर, सतगुरु बतलाई ॥ ६ ॥
मान सरोवर कुंज है, जहँ हंसा खेलै ।
भौसागर की बाट तय, सतगुरु सत बोलै ॥ ७ ॥
हंसा मोती चुगत है, जुग जुग आधारा ।
खात न टूटै परम धन, जो अछै भँडारा ॥ ८ ॥
अमर कच्छ हंसा भये, मिल सब्द समाये ।
औघट लंघे साधवा, वे बहुर न आये ॥ ९ ॥
सुरँग लगावे सुन्न मैं, सो सतगुरु सूचा ।
मुक्ताहल† पद बेलड़ी‡, फल देवै ऊँचा ॥ १० ॥
सतगुरु मिलिया जौहरी, जिन जन्म सुधारा ।
ज्ञान खड़ग की गुर्ज§ से, दूतर‖ सब मारा ॥ ११ ॥
बिरह बिथा का बादला, घट अंदर बूटा¶ ।
दास गरीब दया भई, भल सतगुरु टूठा** ॥ १२ ॥

(३)

चिंतामनि कूँ चेत रे, मुक्ताहल पाया ।
सतगुरु मिलिया जौहरी, जिन्ह भेद बताया ॥टेक॥
हीरा मनि पारस परस, लख लाल नरेसा ।
मोती जवाहर जोगिया, वह दुर्लभ देसा ॥ १ ॥
कामधेनु कलवृच्छ हैं, दरबार हमारे ।
अठ सिधि नौ निधि आँगनै, नित कारज सारे ॥ २ ॥

*परिपूर्ण । †मोती । ‡बेल । §गदा । ‖दूत । ¶बरसा ।
**बख्शिश की ।

राग छतीसो ऋधि सबै, जहँ रास रवानी* ।
ताल तँबूरे तूर हैं, अवगत निरबानी ॥ ३ ॥
सुन मैं बाजै डुगडुगी, बरवै† पद गावै ।
चल हंसा उस देस कूँ, जो बहुर न आवै ॥ ४ ॥
नूर महल गुलजार है, निज सब्द समाये ।
हंसा बहुर न आवहीं, सत लोक सिधाये ॥ ५ ॥
सतगुरु मंझ दलाल है, जिन सौदा कीन्हा ।
दास गरीब दया भई, सत साहब चीन्हा ॥ ६ ॥

(४)

नूर नगर बेगमपुरा, पुर पट्टन थानं ।
सतगुरु सैन लखाइया, जो पद निर्बानं ॥ टेक ॥
कोकिल बानी होत है, पारख नि:तंती ।
जाका मुजरा होयगा, तन काढ़ै जंती ॥ १ ॥
अनुरागी नि:तन्त है, पद पारख लीजै ।
प्रेम पियाला पीय कर, कहिं भेद न दीजै ॥ २ ॥
अनुरागी नि:तन्त में, ले सुरत समोई ।
महल महरमी जाहिंगे, तन आपा खोई ॥ ३ ॥
सिंगल‡ बैन§ अवाज है, जहँ सुरत समाहीं ।
निरत निरंतर रम रही, तहँ दूसर नाहीं ॥ ४ ॥
आसन अरसी पेख ले, सुन मंडल मेला ।
सिंगी नादू बाजहीं, जहँ गुरू न चेला ॥ ५ ॥

*रमनीक सुहावना । †एक रागिनी का नाम । ‡नाम संस्कृत की कविता जारी करने वाले का ; राग । §शब्द ।

(सिर) छत्र अनूपम सेत है, जहँ साहब रहता।
चौंर सुहंगम दुरत हैं, यूँ सतगुरु कहता ॥ ६ ॥
झिलमिल नूर अपार है, जहँ जंत्री जोगी।
सकल बियापी रम रहा, पारस रस भोगी ॥ ७ ॥
दृष्ट मुष्ट आवै नहीं, मौनी महबूबं।
बिरह बिहंगम बैत* है, असली पद खूबं ॥ ८ ॥
उज्जल भँवर अनंत है, जहँ कुंजी बैना।
सब्द अतीत समाधिया, लख उनमुन नैना ॥ ९ ॥
घाट बाट पावै नहीं, बिन सतगुरु सैना।
भेष परे हैं भरम मैं, सब फोकट फैना† ॥ १० ॥
सुरत निरत मन पवन का, इक अंग बनाया।
सो हंसा सुन मैं गये, सत लोक बसाया ॥ ११ ॥
बिन पर भँवर उड़ाइया, बिन पगौं‡ पयाना§।
दास गरीब अगमपुरी, जहँ ज्ञान न ध्याना ॥ १२ ॥

(५)

मैं अमली निज नाम का, मद खूब चुवाया।
पिया पियाला प्रेम का, सिर साँटे‖ पाया ॥ टेक ॥
गन गंधर्प जोधा बड़े, कैसे ठहराया।
सील खेत रन जंग मैं, सतगुरु सर¶ लाया ॥ १ ॥
पाँच सखी नित संग हैं, कैसे हैं त्यागी।
अमर लोक अनहद रते, सोई अनुरागी ॥ २ ॥

*घर। †झूठा झगड़ा। ‡पाँव। §चलाना। ‖बदले में यानी सिर देकर। ¶बान।

परपंची पाकर* लिया, बिरहे का कंपा†।
जहँ संख पद्म उजियार है, झलकत है चंपा ॥ ३ ॥
कुंभ‡ कलाली भर दिया, महँगा मद नीका।
और अमल नापाक है, सब लागत फीका ॥ ४ ॥
एक रती पावे नहीं, बिन सीस चढ़ाये ।
यह साहब राजी नहीं, नर मुंड मुड़ाये ॥ ५ ॥
नौधा के नर बहुत हैं, बैकुंठ सिधौरा§ ।
सुकिरत नाम सँभालियो, लूटत जम जौरा ॥ ६ ॥
सुकिरत नाम समीप है, सिव गौर सुनाया।
सुवटे से सुकदे हुआ, 'पारस पद पाया||। ७ ॥
रंग महल में रोसनी, रमते से मेला ।
परसा दास गरीब है, सतगुरु का चेला ॥ ८ ॥

(६)

आज का लाहा लीजिये, कल्ह किस कूँ होई।
यह तन माटी मेँ मिलै, जानै सब कोई ॥ टेक ॥
लखी करोड़ी चल गये, बहु जोड़ खजाना ।
जा तन चंदन लेपते, सो धरे मसाना ॥१॥
हस्ती घोड़े पालकी, दल बल बहु साजा ।
सवा लाख संगी गये, रावन से राजा ॥२॥
कुंभकरन से बीर थे, लंका छत्रधारी ।
नाम बिना बंस बूड़ि है, समझावै नारी ॥३॥

*पकड़। †चिड़िया फँसाने की तीलियाँ। ‡घड़ा। §जाने वाले।
||देखो कथा नोट पृष्ठ ९३-९४।

भभीछन पद भेदिया, निरगुन निरबाना।
रावन दई बिसार रे, तज गरब गुमाना ॥४॥
बड़ चकवै* काल चक्र पड़े, जिन नाम बिसारा।
कंस केसि चानूर से, धर बाल पछारा ॥५॥
हिरनाकुस समझै नहीं, पहलाद पढ़ावै।
उदर बिनासा आन कर, तब कौन छुड़ावै ॥६॥
जरासिंध से मारिया, और सहस्राबाहू।
ग्राह से गजहि छुड़ाइया, निज नाम है साऊ† ॥७॥
दूसासन पर लै गये, एकोतर‡ भाई।
दुरजोधन की देह कूँ, तन गीधन खाई ॥८॥
निरगुन निरभय नाम है, भज लीजो सोई।
अगर दीप सतलोक मेँ, तब बासा होई ॥९॥
सहस अठासी दीप मेँ, उतपति की खानी।
दास गरीब भक्ती मिलै, जब थिर होय प्रानी ॥१०॥

(७)

ज्ञान की अँखियाँ रँग भरी, ले नहिं निज नूरी।
मिरगा बाहर भरमही, नाभी कस्तूरी ॥टेक॥
पीतंबर मस्तक बना, त्रिकुटी अति सोहै।
सो घट छाना§ ना रहै, पद‖ परसा लोहै ॥१॥
सील संतोष बिबेक रे, और ज्ञान बिज्ञाना।
दया दुलीचे बैठ कर, है ब्रह्म समाना ॥२॥
छिमा छत्र जेहि ढुरत है, तामस नहिँ तेजं।
सो नर परसे जानिये, अवगत की सेजं ॥३॥

*चक्रवर्ती राजा। †सहायक। ‡एक से एक। §ख़ाली। ‖त्रिकुटी पद को "पारस" कहा है।

कमल हिरंबर खिल रहे, अनुभौ अनुरागी ।
दास गरीब सतलोक के, सोई बैरागी ॥४॥

(८)

सजन सुराही हाथ है, अमृत का प्याला ।
हम बिरहिन बिरहै रँगी, कोई पूछै हाला ॥टेक॥
चोखा फूल चुवाइया, बिरहिन के ताईं ।
मतवाला महबूब है, मेरा अलख गुसाईं ॥१॥
प्रेम पियाला पीय कर, मैं भई दिवानी ।
कहा कहूं उस देस की, कुछ अकथ कहानी ॥२॥
बरवै राग सुनाय कर, गल डारी फाँसी ।
गाँठ घुली* खूलै नहीं, साजन अबिनासी ॥३॥
गुझ की बात किस कूँ कहूं, कोइ महरम जानै ।
अगली पिछली मत गई, बेधी इक तानै† ॥४॥
सुन्न मँडल सतलोक से, बिरहा चल आया ।
मुझ बिरहिन के लेन कूँ, मेरे सजन पठाया ॥५॥
रोम रोम में राग है, बिरहा रँग रासी ।
लोक बेद झूठे लगे, पिछली बुध नासी ॥६॥
अनहद नादू बाजहीं, अमरापुर माँड़ई ।
सुन्न मँडल सतलोक कूँ, दुलहिन उठ धाई ॥७॥
अरस गुमठ गुलजार है, गैबी गलताना ।
सेत धजा जहँ फरहरैं, पँचरंग निसाना ॥८॥
तन मन छाकै प्रेम से, मन मंगल महली ।
दुलहिन दास गरीब है, जहँ सेज सलहली‡ ॥९॥

*मज़बूत हो गई । †एक ही तान में बेध दिया । ‡सुहाली ।

(९)

सुन्न सरोवर हंस मन, मोती चुग आया ।
अगर दीप सतलोक मैं, ले अजर झराया ॥टेक॥
हंस हिरंबर हेत है, हैरान निसानी ।
सुख सागर मुक्ता भये, मिल बारह बानी* ॥१॥
पिंड अंड ब्रह्मंड से, वह न्यारा नादू ।
सुन्न समझिया बेग रे, गये वाद बिवादू ॥२॥
सतगुरु सार जु गाइया, घर कूँची ताला ।
रंग महल में रोसनी, घट भया उजाला ॥३॥
दीपक जोड़ा नूर का, ले अस्थिर बाती ।
बहुर न भौजल आवहीं, निरगुन के नाती ॥४॥
नाम सहर बेगमपुरा, जहँ लागी ताली ।
सब घट मन मौजूद है, नाहीं कोइ खाली ॥५॥
अजब दिवाना देस है, जहँ हिल मिल रहिये ।
कहता दास गरीब है, मुक्ता पद लहिये† ॥६॥

(१०)

ज्ञान तुरंगम‡ पाड़िया§, ताजी दरियाई ।
पासर|| घाली प्रेम की, चित चाबुक लाई ॥टेक॥
प्रेम धाम से ऊतरे, हुकमी सैलानी ।
सब्द सिंध मेला करैं, हंसौं के दानी ॥१॥
असंख जुग परलै गये, जब के गुन गाऊँ ।
ज्ञान गुरज है दस्त मैं, ले हंस चिताऊँ ॥२॥

*ख़ालिस सोना । †पाइये । ‡घोड़ा । §इकट्ठा किया । ||डोरी,फंदा ।

सील हमारा सेल[*] है. औ छिमा कटारी ।
तत्त तीर तक मार हूं, कहँ जात अनारी ॥३॥
बुधि हमरी बन्दूक है, दिल अंदर दारू[†] ।
प्रेम पियाला सार का, चित चकमक[‡] झारू ॥४॥
तत्त हमारी तेग[§] है, जो असल असीलं ।
सूरे सनमुख लेत हैं, कायर मुख पीलं ॥५॥
घायल घूमै अरस मैं, जिस लगी करारी ।
औषध निःचा नाम है, जिन्ह पीड़[‖] पुकारी ॥६॥
पाखरिया[¶] सतलोक के, रन-जीत पठाये ।
कहता दास गरीब है, गुरुगम से आये ॥७॥

(११)

घट ही अंदर गारडू[**], धोखे मर गइया ।
सार सब्द चीन्हा नहीं, कुछ भेद न लहिया ॥टेक॥
न्योल जड़ी कूँ सूँघ कर, गृह डंक लगावै ।
सरपिन बाँबिहि सूँ डसी, कहिं जान न पावै ॥१॥
बाजी अनहद बीन रे, फूँ भई फुँकारा ।
भगल बिद्या बाजीगरी, जानै गुरु म्हारा ॥२॥
सतगुरु मिलिया गारडू, जिन्ह मंतर दीन्हा ।
नागदमन[††] तिरगुन जड़ी, बिषयर[‡‡] बस कीन्हा ॥३॥
बाजीगर की डुगडुगी, बिषयर भरमाया ।
घाल पिटारे ले चला, घरबार नचाया ॥४॥

---

* भाला । † बारूद । ‡ एक लोहे की चीज जिसको पथरी पर मार कर आग निकालते हैं । § तलवार । ‖ दरद । ¶ लोहे की जाली जो लड़ाई में घोड़े की हिफ़ाज़त के लिये उस पर डालते हैं । ** साँप का मंत्र जानने वाला । †† साँप की जड़ी । ‡‡ साँप ।

ऐसा सतगुरु कीजिये, बाजीगर पूरा ।
दास गरीब अमर करै, दिल दरस जहूरा ॥५॥

(१२)

दरदमंद दरवेस है, बेदरद कसाई ।
संत समागम कीजिये, तज लोक बड़ाई ॥ टेक ॥
डिंभी* डिंभ न छोड़हीं, मरघट के भूता ।
घर घर द्वारे फिरत हैं, कलजुग के कूता ॥ १ ॥
डिंभ करैं डुँगर† चढ़ैं, तप होम अँगीठी ।
पंच अगिन पाखंड है, यह मुक्ति बसीठी‡ ॥ २ ॥
पाती तोरे क्या हुआ, बहु पान झरो रे ।
तुलसी बकरा खागया, ठाकुर क्या बौरे ॥ ३ ॥
पीतल ही का थाल है, पीतल का लोटा ।
जड़ मूरत कूँ पूजते, आवैगा टोटा ॥ ४ ॥
पीतल चमचा पूजिये, जो खान परोसै ।
जड़ मूरत किस काम की, मत रहौ भरोसे ॥ ५ ॥
कासी गया परागृ§ रे, हरपैड़ी न्हाये ।
द्वारावति‖ दरसन किये, बहु दाग दगाये ॥ ६ ॥
इन्द्रदौन असनान रे, कर पुस्कर परसे ।
द्वादस तिलक बनाय कर, बहु चंदन चरचे ॥ ७ ॥
अठसठ तीरथ सब किये, बृन्दावन फेरी ।
नाम बिना खूले नहीं, दिब दृष्ट अँधेरी ॥ ८ ॥
सतगुरु भेद लखाइया, निज नूर निसानी ।
कहता दास गरीब है, छूटे सो प्रानी ॥ ९ ॥

*धोखेबाज़ । †पहाड़ । ‡बकवाद । §प्रयाग । ‖द्वारिका ।

(१३)

नजर निहाल दयाल हैं, मेरे अंतरजामी ।
सोलह कला सपूरना, लख बारहबानी* ॥ टेक ॥
उलट मेरुडंड चढ़ गये, देखा सो देखा ।
संख कोटि रबि झिलमिलैं, गिनती नहिं लेखा ॥१॥
बरन बरन के तेज हैं, पँचरंग परेवा† ।
मूरत कोट असंख हैं, जा मध इक देवा ॥२॥
(जाके) ब्रह्मा झाड़ू देत हैं, संकर करैं पंखा ।
सेस चरन चंपी लगैं‡, अगमी गढ़ बंका ॥३॥
धर ऐनक दुरबीन कूँ, धुन ध्यान लगावै ।
उलट कमल अरसा§ चढ़ै, तब नजरौं आवै ॥४॥
सूछम मूरत सोहनी, अगमै इक-रासा ।
रहता रमता राम है, घट पिंड न स्वासा ॥५॥
जो देखा सो किस कहूं, अचरज इक ख्याला ।
कहता दास गरीब है, निज रूप बिसाला ॥६॥

(१४)

सोई साध अगाध है, आपा न सरावै‖ ।
पर निंदा नहिं संचरै, चुगली नहिं खावै ॥टेक॥
काम क्रोध त्रिस्ना नहीं, आसा नहिं राखै ।
साँचे सूँ परचा भया, जब कूड़ न भाखै ॥१॥
एकै नजर निरंजना, सबही घट देखै ।
उँच नीच अंतर नहीं, सब एकै पेखै ॥२॥

*ख़ालिस सोना । †कबूतर—यहाँ हंस से मतलब है । ‡मुट्ठी लगाना, पाँव दाबना । §अर्श । ‖सराहे ।

सोई साध सिरोमनी, जप तप उपकारी ।
भूले कूँ उपदेस दे, दुर्लभ संसारी ॥३॥
अकल* यकीन पठाय दे, भूले कूँ चेतै ।
सो साधू संसार मैं, हम बिरले भेंटै ॥४॥
सूतक† खोवैं सत कहैं, साँचे सूँ लावैं ।
सो साधू संसार मैं हम बिरले पावैं ॥५॥
निरख निरख पग धरत हैं, जिव हिंसा नाहीं ।
चौरासी तारन तरन, आये जग माहीं ॥६॥
इस सौदे कूँ ऊतरे, सौदागर सोई ।
भरे जहाज उतार दे, भौसागर लोई ॥७॥
भेष धरैं भागे फिरैं, बहु साखी सीखैं ।
जानैं नहीं बिबेक कूँ, खर के ज्यूँ रीकैं‡ ॥८॥
खास मुकामा दरस है, जो अरस रहंता ।
उनमुन मैं तारी लगी, जहँ अजप जपंता ॥९॥
सुन्न महल अस्थान है, जहँ अस्थिर डेरा ।
दास गरीब सुभान§ है, सत साहब मेरा ॥१०॥

(१५)

सत्त कहन कूँ राम है, दूजा नहिं देवा ।
ब्रह्मा बिसुन महेस से, जा की करते सेवा ॥ टेक ॥
जप तप तीरथ थोथरे, जा की क्या आसा ।
कोट जग्ग पन दान से, जम कटै न फाँसा ॥ १ ॥
इहाँ देन उहा लन है, यह मिटै न झगरा ।
बिना पंथ की बाट है, पावै कों दगरा‖ ॥ २॥

*बुद्धि †अशुद्धता । ‡गधे की तरह रेंकैं । §पवित्र । ‖रास्ता ।

बिन ही इच्छा देन है, सो दान कहावै ।
फल बंछै* नहिँ तासु का, अमरापुर जावै ॥ ३ ॥
सकल दीप नौ खंड के, छत्री जिन जीते ।
सो तो पद मैँ ना मिले, बिद्या गुन चीते† ॥ ४ ॥
कोट उनंचा‡ पृथ्वी, जिन दीन्ही दाना ।
परसराम औतार कूँ, कीन्हे कुरबाना ॥ ५ ॥
कंचन मेरु सुमेर रे, आये सब माहीं ।
काम धेनु कल्प बृच्छ रे, सो दान कराहीं ॥ ६ ॥
सुर नर मुनि जन सेवहीं, सनकादिक ध्यावैँ ।
सेस महेस मुख रटत हैँ, जा का पार न पावैँ॥ ७ ॥
ब्रह्मा बिसुन महेस रे, देवा दरबारी ।
संख कलप जुग हो गये, जा की खुलै न तारी॥ ८॥
परलै संख असंख रे, पल माँह बिहानी§ ।
गरीबदास निज नाम की, महिमा हम जानी ॥ ९ ॥

(१६)

सुख के सागर राम हैँ, जेहि धरिये ध्याना ।
तिरबिनी के घाट रे, कीजे असनाना ॥ टेक ॥
नाभि कमल से उच्चरे, दम लेखे लावो ।
परबी कोट अनंत हैँ, सुख सागर न्हावो ॥ १ ॥
अनंत कोट धुन होत हैँ, सुख सागर माहीं ।
पैड़ी पंथ न महल के, जहँ हंसा जाहीं ॥ २ ॥

*चाहे । †क्योंकि उन के चित्त में विद्या और गुन का घमंड था । ‡शास्त्रों के अनुसार पृथ्वी उनचास कोट जोजन नाप में है । §बीत गये ।

ओं मूल उच्चार है, जपिये मन माला ।
सुछम बेद से धुन लगी, पहुंचे चित्र साला ॥३॥
अैनक आदि अनाद है, दुरबीन धियाना ।
पलकोँ चौंरा कीजिये, त्रिकुटी अस्थाना ॥ ४ ॥
सहस कमल दल जगमगै, जहँ भँवर गुँजारा ।
घटा गरज बहु दामिनी, अनहद झनकारा ॥५॥
गरजै सिंध अगाध रे, बिन सरवन सुनिया ।
नरकी क्या बुनियाद है, पहुंचत नहिं मुनिया* ॥६॥
मन पौना के गमन† से, आगे लख भाई ।
सुरत निरत के पंख ले, हंसा उड़ जाई ।७॥
अधर बिहंगम उड़ चलै, भौंरी ले भौंरा ।
गरीबदास कहु क्या करै, जा का जम जोरा ॥८॥

(१६)

कर साहब की बंदगी, बैरागर लै रे ।
समरथ साँईं सीस पर, तो कूँ क्या भै रे ॥ टेक ॥
सील संतोष बिबेक हैँ, अरु ज्ञान बिज्ञाना ।
दया धरम चित चौतरे, बाँचो परवाना ॥१॥
धरम धजा जहँ फरहरै, होहि जग‡ ज्योनारा ।
कथा कीरतन होत है, साहब दरबारा ॥२॥
सुमता§ माता मित्र है, रख अकल यकीनं ।
सत्त धरे तैँ खुलत है, दिल मेँ दुरबीनं ॥३॥

*मुनी । †पहुंच । ‡यज्ञ । §सुमति, अच्छी बुद्धि ।

जा के पिता बिबेक से, अरु भाव से भाई ।
या पटतर[*] नहिं और है, कुछ बहिन सगाई[†] ॥४॥
द्रृढ़ के डुंगर[‡] चढ़ गये, जहँ गुफा अनादं ।
लागी सब्द समाध रे, धन सतगुरु साधं ॥५॥
सहस मुखी जहँ गंग है, तालिब तिरबेनी ।
जहाँ ध्यान असनान कर, परबी सुख चैनी ॥६॥
कोट करम कसमल[§] कटै, उस परबी न्हाये ।
वह साहब राजी नहीं, कुछ नाचे गाये ॥७॥
अगर मूल महकंत है, जहँ गंध सुगंधा ।
एक पलक के ध्यान से, कटिहै सब फंदा ॥८॥
दो मुड़ की भाठी चुवै, जहँ सुखमन पोता ।
इला पिंगला एक कर, सुखसागर गोता ॥९॥
अबल बली बरियाम है, निरगुन निरबानी ।
अनंत कोट बाजे बजैं, बाजैं सहदानी[‖] ॥१०॥
तन मन निःचल होगया, निज पद से लागे ।
एक पलक के ध्यान से, दुन्दर[¶] सब भागे ॥११॥
पुर पट्टन के घाट मैं, इक पिंगल पंथा ।
छुटैं फुहारे नूर के, जहँ धार अनंता ॥१२॥
झिल मिल झिल मिल होत है, उस पुर मैं भाई ।
घाट बाट पावै नहीं, है द्वारा राई[**] ॥१३॥
तहँ जहँ संख सुरंग है, मध औघट घाटा ।
सतगुरु मिलैं कबीर से, तब खुलै कपाटा ॥१४॥

[*]बराबर । [†]सगी, अपनी । [‡]पहाड़ । [§]पाप । [‖]शहनाई । [¶]दुंद, अंधकार । [**]राई के समान झीना ।

सेत कमल जहँ जगमगै, पीताँबर छाया ।
सूरज सख सुभान* है, अबिनासी राया ॥ १५ ॥
अगर डोर से चढ़ गये, धुन अलल धियाना ।
दास गरीब कबीर का, पाया अस्थाना ॥ १६ ॥

(१७)

लोक लाज नहिं कीजिये, निरभय हो रहिये ।
यह मन साधोँ दीजिये, (तौ) गोबिंद पद पइये ॥टेक॥
भौसागर जोनी जनम, हरि दास मिटावैँ ।
बहुर बहुर नहिं आवहीँ, मुक्ता पद पावैँ ॥ १ ॥
ऐसे हरि जन संत हैँ, संगत नित कीजै ।
झूठे जग की लाज मेँ, नाहीँ चित दीजै ॥ २ ॥
यह जग बदरा† धुँध का, मिहर‡ पौना डरिये ।
जौ मन चाहे राम कूँ, दासा तन करिये ॥ ३ ॥
हस्ती डर माने नहीँ, जे स्वान भुकाहीँ ।
सतसंगी संगत ना तजैँ, चित राम बसाहीँ ॥ ४ ॥
स्वान रूप संसार है, कुछ करसी नाहीँ ।
सीस महल कूँ देख कर, भौँकत मर जाहीँ ॥ ५ ॥
मतवाले महबूब हैँ, साधू जग माहीँ ।
गरीबदास समझावहीँ, जिग्यासी§ ताईं ॥ ६ ॥

(१८)

राम कहे मेरे साध कूँ, दुख मत दीजो कोय ।
साध दुखावे मैँ दुखी, मेरा आपा भी दुख होय ॥ टेक ॥

*पवित्र। †बादल। ‡मिहर अर्थात दया के पवन से डरता है। §खोजी।

हिरनाकुस उदर बिदारिया, मैं हीं मारा कंस ।
जो मेरे साध कूं आन दुखावै, जाका खोऊँ बंस ॥ १ ॥
पहुँचूँगा छिन एक में, जन अपने के हेत ।
तेंतिस कोट की बन्ध छुटाई, रावन मारा खेत ॥ २ ॥
कला* बधाऊँ† संत की, परगट करिहै मोय‡ ।
गरीबदास जुलहा कहै, मेरा साध न दहियो§ कोय ॥३॥

(१९)

करो निवेरा रे नरो, जम माँगै बाकी ।
कर जोड़े धरम राय खड़‖, सतगुरु है साखी ॥टेक॥
माटी का कलबूत¶ है, सतगुरु का साजा ।
उस नगरी डेरा करो, जहँ सब्द अवाजा ॥ १ ॥
नूर मिलेगा नूर में, माटी में माटी ।
कोइक** साधू चढ़ गये, उस औघट घाटी ॥ २ ॥
रोम रोम में राम है, अजपा जप लीजै ।
सुरत सुहंगम डोर गहि, प्याला मधु पीजै ॥ ३ ॥
जम की फरदी†† ना चढ़ै, सोई जन सूरा ।
परसा दासगरीब है, जोगेसर पूरा ॥ ४॥

(२०)

अगम ज्ञान की धुन सुनी, दुलहिन भई बौरी ।
यह भगलीगिर का जंत्र है, कोई लखै न डोरी ॥ टेक ॥
जूठे फल परवान हैं, परतीत जु स्योरी‡‡ ।
यह अनुराग अनादि है, जो अमर भई गौरी§§ ॥१ ॥

*महिमा †बढ़ाऊँ। ‡मुझको। §सतावो। ‖खड़ा। ¶साँचा, शरीर। **कोई एक। ††फर्द, चिट्ठा। ‡‡जो सेवरी भिल्लनी सरीखी प्रतीत है। §§पारबती।

बिन तरवर* के बाग है, जहँ लागै मौरी† ।
त्रिकुटी सिंध पिछान ले, मधुकर है भौंरी ॥२॥
अष्ट कमल दल भीतरा, सुमिरन सुमिरो री ।
यह औसर चूको नहीं, कुछ होय सु हो री ॥ ३ ॥
पिंड प्रान तिस वारहू, तन मन अरपो री ।
गरीबदास पद अरस में, सुर्त सिंध मिलो री ॥ ४ ॥

राग काफी

मन मगन भया जब क्या गावै ॥ टेक ॥
ये गुन इंद्री दमन करेगा, बस्तु अमोली सो पावै॥१॥
तिरलोकी की इच्छा छाँड़ै, जग में बिचरै निर्दावै ॥२॥
उलटी सुलटी निरत निरंतर, बाहर से भीतर लावै ॥३॥
अधर सिँघासन अवचल आसन, जहँ उहँ सुरती ठहरावै
त्रिकुटी महल में सेज बिछी है, द्वादस अंदर छिप जावै५
अजर अमर निज मूरत सूरत, ओअं सोहं दम ध्यावै ॥६
सकल मनोरथ पूरन साहब, बहुर नहीं भौजल आवै ॥७॥
गरीबदास सतपुरुष बिदेही, साँचा सतगुरु दरसावै ॥८॥

(२)

मन मगन भया कैसे जाना ॥ टेक ॥
ब्रह्म खुमारी सुन्न अधारी, आठ बखत रहे गलताना ॥१
ओअं सोहं सार बस्तु है, अजपा जाप सही जाना ॥२
यह तन देही बहुर नहीं है, अष्ट कमल दल अस्थाना॥३॥
थावर जंगम मैं जगदीसं, क्या पूजै जल पाषाना॥४॥

*पेड़ । †बौर ।

सुरत सनेही सिंध मिलैंगे दिल कूँ खोजैं दिल-दाना॥५॥
या मन मूरत चंपा सूरत, समझ बूझ ले ब्रह्म ज्ञाना॥६॥
बिनमसि[*] का इक अंक अरस[†] में, क्या पढ़िये पोथीपाना[‡]
संख कँगूरा[§] बाजैं तूरा, सेत धजा लख असमाना॥८॥
उजल हिरंबर सब्द घुरंबर[‖], जम जोरा नहिँ तलबाना९
गंगा जमुना मद्ध सुरसती, मान सरोवर मैँ न्हाना॥१०
मोछ मुक्त जहँ पित्र होत हैं, वहाँ करो पिंड परदाना[¶]११
अर्थ धर्म सब काम मोछना, आद पुरुष पद निरबाना१२
गरीबदास दरपन मुख दरवै[**], संख कला रवि ससि भाना

(३)

मन मगन भये का सुन रासा ॥ टेक ॥
यह इंद्री परकिरती प्रेरै, डार चलै तिरगुन पासा॥१॥
सफम सफा[††] है मिले नूर मैं, काम क्रोध का कर नासा२
यह तन खाक मिलैगा भाई, क्या पहिरे मलमल खासा ३
पिंड ब्रह्मंड कुछ थीर नहीं है, गगन मँडल मैं करबासा॥४
चिंता चेरी दूर परै री, काट चलो जम का फाँसा ॥५॥
मान बड़ाई जमपुर जाई, होय रहो दासन दासा॥६॥
गरीबदास पद अरस अनाहद, ओअं सोहं जप स्वासा॥७

(४)

मन मगन भया सो ब्रह्मचारी ॥ टेक ॥
यह मन अकल अजीत जीतिया,
दमन[‡‡] करी पाँचो नारी ॥१॥

*सियाही । †अर्श । ‡पन्ना, वरक़ §छोटे छोटे बुर्ज । ‖घुर रहा है । ¶प्रदान । **दरसै । ††साफ़ से साफ़ । ‡‡ज़ेर ।

दुरमत का तो देवल* ढाहा,
पंकर लई मनसा दारी† ॥२॥
चित के अंदर चौपड़ खेलै,
जहँ फिरती सोलह सारी‡ ॥३॥
जा की नरद पकी घर आवै,
गर्भ बास मैं ना जा री ॥४॥
जोनी संकट मोछ होत है,
उतर गये भैाजल पारी ॥५॥
दुहूँ दीन षट दरसन त्यागे,
ऐसी ही धारन धारी ॥६॥
झिलमिल नैना अनहद बैना,
लाग रही उनमुन तारी ॥७॥
या जग निन्दा बिन्दा करिहै,
कोइ अस्तुत कोइ दे गारी ॥८॥
गरीबदास दीदार दरस कर,
फगुआ खेलन की बारी ॥९॥

(५)

दम दा नहीं भरोसा साधो,
अब तू कर चलने दा सोच ॥ टेक ॥
मुए पुरुष सँग सती जरत है,
परी भरम की भूल ॥१॥
पीठ मनुका§ दाख लदी है,
करहा‖ खात बँबूल ॥२॥

*मंदिर। †नारी। ‡नरद, गोटी। §मुनक्का। ‖ऊँट।

मँड़ी* मंदिर बाग बगीचे,
रहसी डाल न मूल ॥३॥
जिंदा पुरुष अचल अबिनासी,
बिना पिंड अस्थूल ॥४॥
नैनों आगे झुक झुक आवै,
रतन अमोली फूल ॥५॥
गरीबदास यह अलल† ध्यान है,
सुरत हिँडोले झूल ॥६॥

(६)

तारैँगे तहक़ीक सतगुरु तारैँगे ॥ टेक ॥
घट ही मैँ गंगा घट ही में जमुना,
घट ही मैँ जगदीस ॥१॥
तुम्हरै ज्ञाना तुम्हरै ध्याना,
तुम्हरै तारन की परतीत ॥२॥
मन कर धीरा‡ बाँध ले बौरे,
छाँड़ देय पिछलौं की रीत ॥३॥
दास गरीब सतगुरु का चेला,
टारैँ जम की रसीत§ ॥४॥
जल थल साछी एक है रे,
डुँगर‖ डहर¶ दयाल ॥५॥
दसौं दिसा कूँ दरसनं,
ना कहिं जोरा काल ॥६॥

---

*मड़ई, मकान के ऊपर का खंड। †अलल पच्छ, देखो नोट पृष्ट ७९।
‡थिर §हुक्मनामा। ‖पहाड़। ¶रास्ता।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तक-र.ल. दोष उन को दृष्टि में आवैं उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजें जिस वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावैं और जो दुर्लभ ग्रंथ संतबानी उन को मिलें उन्हें भेज कर इस परोपकार के काम में सहायता करें।

यद्यपि ऊपर लिखे हुए कारनों से इन पुस्तकों के छापने में बहुत ख़र्च होता है तौ भी सर्व साधारन के उपकार हेतु दाम आध आना फ़ी आठ पृष्ठ से अधिक किसी का नहीं रक्खा गया है। जो लोग मुस्तकिल ख़रीदार अर्थात पक्के गाहक होकर कुछ पेशगी जमा कर देंगे जिस की तादाद दो रुपये से कम न हो उन्हें एक चौथाई कम दाम पर जो पुस्तकें आगे छपेंगी बिना माँगे भेज दी जायँगी यानी रुपये में चार आना छोड़ दिया जायगा परंतु डाक महसूल उन के ज़िम्मे होगा और पेशगी दाम न देने की हालत में वी० पी० कमिशन भी उन्हें देना पड़ेगा। जो पुस्तकें अब तक छप गई हैं (जिन के नाम आगे लिखे हैं) सब एक साथ लेने से भी पक्के गाहकों के लिये दाम में एक चौथाई की कमी कर दी जायगी पर डाक महसूल और वी० पी० कमिशन लिया जायगा।

अब मीरा बाई के भजन और दरिया साहब बिहार के महात्मा का दरियासागर ग्रंथ जो अब तक दूसरी प्रति लेख की न मिलने के कारन रुका हुआ था हाथ में लिये गये हैं।

प्रोप्रैटर, बेलवेडियर ना,
आद।

जून, १९१० ई०

संतबानी पुस्तक-माला

तुलसी साहब (हाथरस वाले) की शब्दावली और जीवन-चरित्र ... २)

" " " रत्न सागर मय जीवन-चरित्र ... ॥=)

गरीबदास [illegible] की बानी और जीवन-चरित्र ... ... ॥[illegible]

कबीर साह[illegible] की शब्दावली और जीवन-चरित्र, भाग १ दूसरा एडिशन [illegible]

" " शब्दावली भाग २ ... ... [illegible]

" " अखरावती ... ...

पलटू साहब की शब्दावली (कुंडलिया इत्यादि) और जीवन-चरित्र,

भाग १ ... ...

" " शब्दावली, भाग २ ... ... [illegible]

धरमदासजी की बानी और जीवन-चरित्र, भाग १ ॥[illegible]

" " भाग २ ... ... [illegible]

रैदासजी की बानी और जीवन-चरित्र ... ... [illegible]

जगजीवन साहब की बानी और जीवन-चरित्र, भाग १ ... [illegible]

दरिया साहब (मारवाड़ वाले) की बानी और जीवन-चरित्र,

दूसरा एडिशन ... ... [illegible]

भीखा साहब की [illegible] और जीवन-चरित्र ... ... [illegible]

सहजोबाई [illegible] और जीवन-चरित्र ... ... [illegible]

दयाबाई [illegible] और जीवन-चरित्र ... ... [illegible]

गुसाईं [illegible] की बारहमासी ... ... [illegible]

[illegible] जीवन-चरित्र भी अँग्रेज़ी पद्य में छपा है (यह रमणीय पुस्तक एक मेम ने लिखी है संतबानी पुस्तक-माला की नहीं है) ... ...

[illegible] के लिये दाम में महसूल पैकवल कमिशन शामिल नहीं है।

मनेजर, बेलवेडियर प्रेस,

इलाहाबाद